



सत्यमेव जयते

106 वां अंक | अवधि : छमाही



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

वातायन



कार्यालय : प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

ओड़िशा, भुवनेश्वर - 751001



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक महोदय के द्वारा दिनांक 04.01.2024 को कार्यालय का दौरा





सत्यमेव जयते

वातायन

वर्ष 2023-24

(सितम्बर 2023 – मार्च 2024)

अंक – 106 अवधि – छमाही

कार्यालय : प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

ओड़िशा, भुवनेश्वर – 751001

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री कुलवंत सिंह

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

ओड़िशा, भुवनेश्वर

संरक्षक

श्री श्रीराज अशोक

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

प्रकाशन एवं मार्गदर्शन समिति

सुश्री एस. अरुणा

उप महालेखाकार (पेंशन)

श्री विकास कुमार

उप महालेखाकार (लेखा एवं वीएलसी)

श्री संजय कुमार

उप महालेखाकार (निधि)

श्री मनोरंजन पाणिग्राही

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा)

संपादक

सुश्री रूपा कुमारी

वरिष्ठ अनुवादक (अनुभाग प्रभारी)

सहयोग

सुश्री सुनीता देवी, कनिष्ठ अनुवादक

श्री शिवानंद, कनिष्ठ अनुवादक

श्री अजय कुमार साव, कनिष्ठ अनुवादक

श्री रंजीत सिंह, कनिष्ठ अनुवादक



मुख्य संरक्षक की कलम से...

किसी भी राष्ट्र की भाषा भावों और विचारों की वाहिका होने के साथ-साथ उसके सामाजिक व सांस्कृतिक सौहार्द एवं भाषाई एकता की परिचायक होती है। भाषाई विविधता से परे देश की एकता व अखंडता की प्रतीक राजभाषा हिंदी आज न केवल भारत अपितु विश्व स्तर पर सहर्ष रूप से अपनायी जा रही है। यह अत्यंत सुखद अनुभूति है कि राजभाषा हिंदी के प्रति अपने संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए हिंदी को बढ़ावा देने की दिशा में हमारे कार्यालय द्वारा हिंदी छमाही पत्रिका 'वातायन' के 106वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

किसी भी सरकारी संस्थान की हिंदी पत्रिका न सिर्फ उस संस्थान की कार्यालयी गतिविधियों एवं अधिकारियों व कर्मचारियों की हिंदी के प्रति अभिरूचि को व्यक्त करती है बल्कि उन्हें अपनी उस लेखनी प्रतिभा को भी उजागर करने का अवसर प्रदान करती है जो सरकारी सेवा में आने के बाद वक्त के साथ धूमिल पड़ जाती है। भाषा क्षेत्र 'ग' में स्थित होने के बावजूद हमारे कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों का हिंदी भाषा के प्रति उत्साह किसी हिंदी भाषी क्षेत्र से कम नहीं है। 'वातायन' के 106वें अंक में इस कार्यालय के संपादक मंडल, अधिकारियों व कर्मचारियों की रचनात्मकता, सहभागिता और सकारात्मक योगदान सराहनीय है। 'वातायन' पत्रिका का सतत प्रकाशन उनकी बहुमुखी प्रतिभा के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रति उनकी अभिरूचि एवं कर्तव्यबोध को स्वतः व्यक्त करता है।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि 'वातायन' का 106वां अंक भी पूर्व अंकों की भांति सृजनात्मकता की दृष्टि से अद्वितीय होने के साथ ही हिंदी के विकास एवं प्रचार-प्रसार की दिशा में प्रेरणादायी सिद्ध होगा।

'वातायन' के इस अंक और आने वाले भावी अंकों के लिए मेरी अशेष शुभकामनाएं।

(कुलवंत सिंह)

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)



शुभकामना संदेश

कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं कार्यालयीन गतिविधियों में हिंदी की विकास यात्रा को समेटे हुए अर्धवार्षिक हिंदी ई-पत्रिका "वातायन" का 106वां अंक पाठकों के समक्ष साझा करते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका न केवल कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को दर्शाती है बल्कि कार्मिकों को अपनी रचनात्मकता एवं साहित्य और मातृभाषा से इतर दूसरी भाषा को सीखने के प्रति उनकी अभिरूचि को भी बखूबी व्यक्त करती है।

अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन करते हुए कार्यालय में राजभाषा हिंदी का प्रयोग प्रशसनीय है। कामकाज में हिंदी के प्रयोग में तकनीकी पुट अर्थात् कृत्रिम मेधा (Artificial Intelligence) के प्रयोग से हिंदी में काम करने की गति प्रतिदिन तीव्र हो रही है। साथ ही भाषाई सौहार्द (Lingual Harmony) देश की सभ्यता एवं संस्कृति का आधार हिंदी भाषा सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से विश्वभर में प्रतिष्ठित हो चुकी है।

यह हमारे कार्यालय के लिए अत्यंत गर्व का विषय है कि "वातायन" पत्रिका के माध्यम से हम लगातार राजभाषा हिंदी के सतत विकास में अपना योगदान दे रहे हैं। इस उपलब्धि के लिए संपादक मंडल के समस्त सदस्यों एवं सभी कार्मिकों को बधाई एवं शुभकामनाएं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम इसी प्रकार राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन एवं विकास में अपने दायित्व का पूर्णतः निर्वहन करते रहेंगे।

इस अंक एवं आगामी अंकों हेतु शुभकामनाओं सहित।

१.४५

(श्रीराज अशोक)

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)



संपादकीय...

भाषा केवल अभिव्यक्ति की माध्यम भर नहीं होती, बल्कि यह संस्कृति की वाहक भी होती है। भारत जैसे बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक देश में लोगों के बीच संपर्क स्थापित करने का प्रयास हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के बिना संभव नहीं है। या यूँ कहें कि भारत में हिंदी सबसे प्रभावी और स्वीकार्य संपर्क भाषा है तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। यदि हम किसी भाषा से ज्यादा से ज्यादा लोगों तक अपनी पहुंच स्थापित कर सकते हैं तो वह हिंदी है। 'वातायन' पत्रिका के 106 वें अंक का प्रकाशन भी इसी दिशा में एक प्रयास है।

मेरा मानना है कि राजभाषा हिंदी में कामकाज के अनुकूल वातावरण तैयार करने में हिंदी पत्रिकाओं की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ये पत्रिकाएं एक ऐसा बेहतरीन मंच प्रदान करती हैं जिस पर स्टाफ-सदस्य अपने विचार और भावनाएं हिंदी में सहज-सुलभ तरीके से व्यक्त कर सकते हैं। वे हिंदी पढ़ने व लिखने की प्रक्रिया से गुजरते हैं और इस भाषा के प्रयोग में उनकी दक्षता बढ़ती है। मनुष्य स्वभावतः सृजनशील है और मानव मन में निरंतर स्वयं को अभिव्यक्त करने की छटपटाहट रहती है। हमने इस अभिव्यक्ति के लिए उचित मंच प्रदान करके अपने स्टाफ की रचनात्मकता को निखारने का प्रयास किया है। स्थिति यह है कि कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), ओडिशा, भुवनेश्वर की हिंदी गृह पत्रिका 'वातायन' सृजनात्मकता की अविरल प्रवाहिनी बनी हुई है।

हिंदी भाषा हमारी संवेदनाओं, भावनाओं और पहचान से जुड़ी भाषा है, जो हमारे अन्तर्मन में खुशबू की तरह रची बसी है। चाहे जम्मू-कश्मीर की वादियाँ हो या दक्षिण भारत की समुद्री लहरें, हिंदी की सुरीली गूँज चारों ओर गूँजती है। 'अनेकता में एकता' की भावना लिए हिंदी अब केवल भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में बोली जाने वाली भाषा बन गई है। हिंदी भाषा कृत्रिम मेधा (Artificial Intelligence) और सूचना प्रौद्योगिकी (Information Technology) के माध्यम से दिन प्रतिदिन और भी निखर रही है। इसके विभिन्न आयामों जैसे ऑनलाइन प्रशिक्षण, प्रतियोगिताओं, बैठकों, कार्यशालाओं, हिंदी सॉफ्टवेयरों, अनुवाद टूल्स, हिंदी वेबसाइट आदि ने भारत में इसके प्रयोग को सरल और सुगम बनाया है।

पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन में जहाँ प्रधान महालेखाकार महोदय एवं वरिष्ठ उप महालेखाकार का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है, वहीं कार्यालय के उप महालेखाकारों द्वारा पत्रिका के प्रति रुचि एवं उत्साहवर्धन का संबल मिला है। वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा) के मार्गदर्शन एवं योगदान द्वारा इस पत्रिका को अन्य अंकों की भांति बेहतर बनाने का पूरा प्रयास किया गया है। आपकी प्रतिक्रिया हमारे लिए अमूल्य है। आपके सुझावों का स्वागत है.....

रूपा कुमारी

(रूपा कुमारी)

वरिष्ठ अनुवादक

अनुक्रमणिका

शीर्षक	लेखक/कवि	पृष्ठ सं.
1. ईश्वर विश्वास	श्री संजय कुमार	7
2. वंदना	श्री विकास कुमार	8
3. मन की गीता	श्री मनोरंजन पाणिग्राही	9
4. गया जी-ज्ञान और मोक्ष की स्थली	श्री यशराज मिश्रा	12
5. तुम इतना तेज जो गाड़ी चला रहे हो	श्री रणवीर कुमार	13
6. जिंदगी या ज़हर	श्री मनोहर कुमार झा	13
7. चौथा बंदर	सुश्री रूपा कुमारी	14
8. गोटीपुआ : ओड़िशा का एक नृत्य-नाट्य	श्री अभिषेक कुमार	16
	पति- सोनी कुमारी साव	
9. आदर्श भी और शिक्षक भी	श्री प्रिय चंदन कुमार	18
10. सुकुमार की डायरी का एक पन्ना	श्री महेंद्र कुमार सतपथी	20
11. झाड़ू करती बच्ची	श्री अमित कुमार	22
12. वह पेड़ पुराना	श्री अभिषेक कुमार	23
13. ज्ञान कुंभ	श्री दीपक यादव	24
14. विवाह का नया रूप	श्री रंजीत सिंह	27
15. पहाड़ पर देखा	श्री गौरव यादव	29
16. एक वायु सैनिक की जीवन गाथा	श्री रवीन्द्र कुमार दास	31
17. मन के सवाल	श्री अजय कुमार साव	34
18. 75वें गणतंत्र दिवस पर कर्तव्य पथ समारोह में	श्रीमती सोनी कुमारी	35
19. चाय एक जज़्बात	सुश्री सुभोश्री पात्रा	38
	पुत्री- टी प्रसाद राव पात्रा	
20. दिल है कि मानता नहीं	श्रीमती शांतिलता सेठी	39
21. प्रकृति का गान	सुश्री धृति रानी	41
22. तुम जैसा कैसे बन जाऊँ	श्री विनोद कुमार	41
23. प्राकृतिक संसाधन लेखांकन	श्री अभिजीत कुमार	42

ईश्वर विश्वास



संजय कुमार

उप महालेखाकार (निधि)

जंगल में एक मादा हिरण गर्भावस्था में थी। एक दिन जंगल में घनघोर वर्षा होने के आसार स्पष्ट प्रकट हो रहे थे और आसमान में बिजली भी कड़क रही थी। ऐसी ही बिजली गिरने से जंगल में आग लग गई। मादा हिरण अपने घर से निकल कर भागी और भागते हुए नदी किनारे पहुँच गई। थकी हुई गर्भवती मादा हिरण नदी किनारे पानी पीना चाह रही थी, तभी उसने देखा कि एक शिकारी उस पर अपना निशाना लगा रहा था, वहीं दूसरी ओर से एक शेर मादा हिरण की ओर बढ़ रहा था। सामने नदी में कूदने पर जान का जोखिम ज्यादा था क्योंकि नदी में मगरमच्छ भरे पड़े थे और पीछे जंगल में आग लगी थी; अर्थात् चारों ओर से विपत्ति एवं जान जाने का खतरा था। मादा हिरण ने सोचा कि क्यों न सबकुछ प्रभु पर छोड़ते हुए पेटभर पानी ही पी लिया जाए और ईश्वर को इस मीठे पानी के लिए धन्यवाद भी दिया जाए। मादा हिरण पानी पीने लगी। तभी जोर से बिजली

कड़की जिससे फायर करते हुए शिकारी का हाथ कांप गया और गोली सीधे जाकर शेर को लगी। घायल शेर शिकारी की ओर झपटा तो शिकारी भागने लगा। अब वर्षा तेज होने लगी जिससे जंगल की आग भी बुझ गई। मादा हिरण ने भरपेट मीठा जल पीकर ईश्वर को धन्यवाद दिया। उसने तीन नन्हें शावकों को जन्म दिया और हमेशा ईश्वर कृपा के लिए कृतज्ञ बनी रही।

मित्रों, हम भी तो सामने आई प्रसन्नता को नजरअंदाज करते हुए भावी संकट की कल्पना कर दुःखी रहते हैं। हम सत्य कर्तव्य करें एवं शेष ईश्वर पर छोड़ दें। आप ऐसा विश्वास करें कि परम् पिता परमेश्वर यदि हमारे पिता हैं तो वह निश्चित ही हमारा कल्याण करेंगे। थप्पड़ सिर्फ उनके लिए है जो असत्य मार्ग के पथिक हैं।

॥हरि ॐ शांति॥





विकास कुमार

उप महालेखाकार (लेखा एवं वीएलसी)

वंदना

वंदे जननी, धरा अपूर्व रमणी,
शोभित धवल नवल हरित नंदिनी।
उदित-मुदित सविता, आभा स्वर्णिम,
विस्तारित नभ जैसे छूती जलधि तरंगिणी ॥1॥

नित्य प्रक्षालित सागर तट पे
बसते जहाँ नाथ जगत के।
शंख जय घोष मध्य, नित्य सँवरते,
हृदयंगम लालायित जन-मन तरसते ॥2॥

जहाँ शिखर पर धर्म ध्वजा फहरते,
बिहग-वृंद उन्मुक्त गगन विचरते।
अपार सागर से लोक-जन उमड़ते
भाव-भक्ति, हर दिल विह्वल रहते ॥3॥

वंदे तारिणी, रत्नगर्भा धरा वंदिनी
उल्लसित, पुष्पित, पुलकित संतन तेरे।
तू है अतुल्य, अप्रतिम उत्कल धरणी
नमो-नमो हे पावन जननी ॥
नमो-नमो हे उत्कल जननी ॥4॥



“हिंदी भाषा अपनी अनेक धाराओं के साथ प्रशस्त क्षेत्र में प्रखर गति से
प्रकाशित हो रही है।”

- छविनाथ पांडेय।

मन की गीता



मनोरंजन पाणिग्राही

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

भगवान श्रीकृष्ण ने महाभारत के दौरान अर्जुन को कुछ उपदेश दिए थे, जिसे जीवन का असली सूत्र कहा जाता है। कृष्ण ने अपने इन उपदेशों से जीवन के गूढ़ रहस्य को समझाया है। महाभारत में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जो उपदेश दिया वह श्रीमद् भागवद् गीता के नाम से प्रसिद्ध है। यह महाभारत के भीष्म पर्व का अंग है। गीता में 18 अध्याय और 700 श्लोक हैं।

परंतु मन की गीता में कितने अध्याय हैं? कितने श्लोक हैं? मन शरीर का वह हिस्सा है, जहां महाभारत युद्ध अनवरत चलता रहता है। मन हमारा कुरुक्षेत्र भी है और धर्मक्षेत्र भी। इस कुरुक्षेत्र में पांडव कौन है? तथा कौरव कौन है? अर्जुन कौन है? और श्री भगवान/श्री कृष्ण कौन है?

मन व्यापक है, एक है, अनेक है, क्रियाशील है, क्रियारहित भी; संग है असंग है, शांत है, अशांत है, निर्गुण निराकार है, सगुण साकार भी है; मुक्त है तथा प्रकृति पर आश्रित भी है। वास्तव में मन क्या है और मन के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए? मन में आने वाले अच्छे-बुरे विचारों से परेशान होने के बजाय किस प्रकार मन के इन बंधनों से मुक्त हो सकते हैं? इस अस्थिर, चंचल, प्रत्यनशील और सर्वव्यापक मन का प्रकृति, स्वरूप और महत्व क्या है? इस बात को थोड़ा-बहुत समझने की कोशिश करें।

यह शरीर पाँच तत्वों से मिलकर बना है- मिट्टी, जल, वायु, अग्नि और आकाश। ये हमारे भौतिक शरीर के अवयव हैं। यह भौतिक शरीर स्थूल और नक्षर है। इसमें मन कहाँ स्थित है? मन का निवास कहाँ है? शरीर के अंतःकरण में चार भाग हैं- मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार, जो शरीर द्वारा की जाने वाली क्रिया का संचालन करते हैं। अंतःकरण के चार भागों में से मन एक है। यह मानव मन को समझने, इसके स्वरूप और महत्व को जानने के लिए अंतःकरण के इन चार श्रेणियों मानस, बुद्धि, अहंकार और चित्त को जानना आवश्यक है।

मानस:

मानस या मन का निवास सिर में होता है। जिसे मस्तिष्क कहते हैं। यह हमारी भृकुटी से चलकर सिर के पीछे के उभरे हुए भाग तक फैला हुआ है। इसमें दायां और बायां दो

भाग होते हैं। परंतु मानस में कई परते हैं। मानस केवल मस्तिष्क नहीं है, यह पूरे शरीर में व्याप्त है। शरीर की प्रत्येक कोशिका में एक अभूतपूर्व स्मृति होती है- न केवल इस जीवन की बल्कि लाखों वर्षों की। हमारा शरीर स्पष्ट रूप से याद रखता है कि दस लाख साल पहले हमारे पूर्वज कैसे थे। ऊपर से नीचे तक मानस है- इसे मनोमय कोश कहा जाता है। शरीर की प्रत्येक कोशिका में स्मृति है लेकिन बुद्धि नहीं है। बुद्धि केवल मस्तिष्क में होती है।

बुद्धि:

बुद्धि स्मृति का एक डेटा बैंक है जिसके बिना बुद्धि कार्य नहीं कर सकती। हमारे पास मौजूद डेटा के आधार पर बुद्धि इधर-उधर खेलती है। आपकी बुद्धि कितनी तीव्र है। इस पर निर्भर करते हुए एक समान डाटा बैंक के साथ एक व्यक्ति एक खरब विचार उत्पन्न कर सकता है, तो कोई अन्य व्यक्ति 10 ट्रिलियन विचार उत्पन्न कर सकता है। बुद्धि जोड़ना घटाना जानती है, इस चीज और उस चीज में संबंध स्थापित करना जानती है और प्रत्येक प्रसंग में तर्क ढूंढ़ती है। लेकिन मन वो है जिसमें संकल्प-विकल्प उठते गिरते हैं, जिसमें आकर्षण-विकर्षण आते-जाते रहते हैं, जहां कभी कुछ है और कभी कुछ भी नहीं है तो कभी कुछ और है। असल में, मन के पीछे केवल अवचेतन मन की शक्ति ही नहीं, बल्कि मन सात अलग स्तर की शक्तियाँ रखता है। ये वो शक्तियाँ हैं जिनका उपयोग करके मन हमें अपना गुलाम बनाकर नचाता रहता है, लेकिन इन्हीं शक्तियों को नियंत्रित कर मन को अपना गुलाम भी बनाया जा सकता है।

अहंकार:

बुद्धि सीधे मन के तीसरे आयाम से जुड़ती है, जिसे अहंकार कहा जाता है अहंकार का अनुवाद कभी-कभी अहंकार के रूप में किया जाता है, लेकिन यह उससे कहीं अधिक है। अहंकार आपको पहचान का एहसास कराता है एक बार जब आपका अहंकार एक पहचान बना लेता है, तो आपकी बुद्धि केवल उसी संदर्भ में कार्य करती है। बुद्धि से परे कार्य करना महत्वपूर्ण है क्योंकि बुद्धि गंभीरता से आपकी पहचान का गुलाम है।

चित्तः

मन की चौथी श्रेणी को चित्त कहा जाता है। चित्त स्मृति रहित मन है- शुद्ध बुद्धि। यह बुद्धिमत्ता ब्रह्माण्डीय बुद्धिमत्ता की तरह है-बस वहां सब कुछ उसी के कारण होता है। यह स्मृति से कार्य नहीं करता- यह बस कार्य करता है। एक तरह से, जिसे आप ब्रह्मांड कहते हैं, वह एक जीवित मन है, बुद्धि के अर्थ में नहीं बल्कि चित्त के अर्थ में। चित्त मन का अंतिम बिंदु है। यह आपके भीतर सृजन के आधार से जुड़ा है। यह आपको आपकी चेतना से जोड़ता है।

हमारा मन शरीर की 20 फीसदी ऊर्जा अकेले ही उपयोग करता है। इसमें कई अरब न्यूरो होते हैं, जो एक दूसरे से जुड़े रहते हैं और उनके जरिए ही दिमाग काम करता है। दिमाग के कई हिस्से होते हैं और हर हिस्से के अलग-अलग कार्य होते हैं, जैसे यादाश्त, चलने, बोलने, सोचने का काम अलग-अलग हिस्से से होते हैं। मन के तीन रूप माने गए हैं, चेतन, अचेतन और अचेतन। लेकिन मन की संख्या इतने तक ही सीमित नहीं है। कई बार ये तीन मन तीन हज़ार बन जाते हैं। महान मनोवैज्ञानिक फ्रायड के अनुसार मन तीन प्रकार के होते हैं।

1. चेतन मन (वर्तमान स्थिति या ऊपरी व्यवहार)
2. अचेतन मन (दमित या अतृप्त इच्छाएं)
3. अर्धचेतन मन (चेतन + अचेतन मन)

चेतन मन को हम एक्टिव माइंड (सक्रिय मन) भी कह सकते हैं। जब हम किसी कार्य को पहली बार सीखने या करने की कोशिश करते हैं तो उस समय हमारा मन पूरी तरह चेतन अवस्था में होता है या पूरी तरह एक्टिव होता है। हमारा पूरा ध्यान उस कार्य के प्रति हो जाता है। यही चेतन मन है। इसे जागृत मन भी मान सकते हैं। चेतन मन में रह कर ही हम दैनिक कार्यों को निपटाते

हैं अर्थात् खुली आँखों से हम कार्य करते हैं। परंतु कई लोग जागे हुए भी सोए-सोए से रहते हैं। मतलब यह कि जब तक मस्तिष्क में कल्पना, विचार, चिंता, भय आदि चल रहे हैं तब तक आप पूर्ण चेतन नहीं हैं।

अचेतन मन को किसी व्यक्ति की चेतन अनुभूति के बाहर भावनाओं, आग्रहों, यादों और विचारों के भंडार के रूप में समझा जा सकता है। फ्रायड ने अचेतन मन के मनोविज्ञान पर

विस्तार से चर्चा की। फ्रायड के अनुसार अचेतन मानव मन का एक शक्तिशाली भाग है। यह मानव व्यवहार का स्रोत है और मानव विचारों और यादों के लिए भंडार के रूप में कार्य करता है। मनुष्य इस बात से पूरी तरह परिचित है कि उनके चेतन मन में क्या चल रहा है। हालांकि, वे नहीं जानते कि उनके अचेतन मन में क्या चल रहा है। फ्रायड ने कहा कि अचेतन मन में कुछ महत्वपूर्ण सामग्री होती है जिसे संसाधित करना चुनौतीपूर्ण होगा क्योंकि इसे हानिकारक या खतरनाक माना जा सकता है। इसलिए, मनुष्यों ने सूचनाओं को अचेतन मन में बंद करने का एक तंत्र विकसित किया है और यह संकेत देता है कि इस बंद जानकारी के परिणाम स्वरूप अवसाद (Depression) और चिंता (Tension) जैसी मानसिक समस्याएं हो सकती हैं और यह

किसी व्यक्ति के व्यवहार को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती है। अचेतन मन में यौन आग्रह और आक्रामक व्यवहार जैसी कुछ जैविक प्रवृत्तियां होती हैं। इनमें से अधिकांश आदिम व्यवहार चेतन मन तक नहीं पहुंचते, लेकिन वे समाज में अस्वीकार्य और तर्कहीन व्यवहार पैदा करते हैं। इस व्यवहार को अचेतन व्यवहार कहा जा सकता है।

अर्धचेतन का तात्पर्य वैसे मानसिक स्तर से होता है जो वास्तव में न तो पूरी तरह से चेतन है और न ही पूरी तरह से



अचेतन। इसमें वैसी इच्छाएं विचार भाव आदि होते हैं, जो हमारे वर्तमान चेतन या अनुभव में नहीं होते हैं परन्तु प्रयास करने पर वे हमारे चेतन मन में आ जाते हैं। चेतन मन जागृत अवस्था होती है और अवचेतन मन सुप्त अवस्था अर्थात् वर्तमान व पूर्व जन्म में किए गए कार्य की स्मृति। जब हम कोई कार्य करते हैं, कुछ देखते हैं, सोचते हैं, पढ़ते हैं, बोलते हैं, वह चेतन मन से होता है फिर वह जा कर अवचेतन मन में संग्रहित हो जाता है। चेतन मन और अवचेतन मन एक दूसरे के पूरक हैं, इसको संतुलित रखना आवश्यक है।

मन को 11वीं इन्द्रिय माना जाता है, जो सानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों के बीच नियामक (Regulator) का काम करता है। ये इन्द्रियाँ और मन हमारे ज्ञान और कर्म के साधन मात्र न हो कर इस संसार को भोगने के भी साधन है। संसार का सुख भोगने में मन विचार और कल्पना के द्वारा भी सहायता करता है। मनुष्य का मन संसार की सबसे अशांत चीज है।

भगवद् गीता में, अर्जुन ने श्री भगवान से पूछा,

**“चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्वदम्
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्।”**

(भगवद् गीता, 6:34)

अर्थात् हे कृष्ण! यह मन बड़ा ही चंचल, हठी तथा बलवान है, मुझे इस मन को वश में करना, वायु को वश में करने के समान अत्यन्त कठिन लगता है।

भगवान कृष्ण अर्जुन को सलाह देते हुए बोले,

**“असंशयं महाबाहो मनो दुर्गिदं चलम्
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।”**

(भगवद् गीता, 6:35)

अर्थात् हे महाबाहो! निःसंदेह मन बेचैन, अशांत है, इसे नियंत्रित करना कठिन है। लेकिन इसे निरंतर अभ्यास और वैराग्य द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है।

मन को शांत रखने के लिए एवं मन का भटकाव रोकने के लिए यहां कुछ उपाय उल्लेखनीय हैं जो आपके मन को शांत और तेज रख सकते हैं:-

- अपने आप से प्यार करें।
- हमेशा खुश रहें।
- सकारात्मक सोचें।
- शारीरिक व्यायाम करें।

- पूरी नींद लें।
- अपनी पसंद के गाने सुनें।
- विचारों से दूर न भागें। अच्छे हो या बुरे, विचार सब के मन में आते हैं।
- ध्यान लगाने की कोशिश करें।
- जीवन में विश्वास रखें, यह अपना काम खुद करेगा।
- जर्नलिंग (अपने भावों एवं विचारों को प्रतिदिन डायरी में अंकित करना) करना शुरू करें।

मन को जीतने के लिए, मन को पवित्र एवं उत्कृष्ट विचारों के चिंतन में लगाए रखना आवश्यक है। इसके लिए नेत्रों, कानों और जिह्वा का संयम जरूरी है। न बुरा देखें, न बुरा सुनें और न बुरा उच्चारित करें। यदि हम दूषित दृश्य देखेंगे और अश्लील वार्ता सुनेंगे, तो मन स्वतः दूषित हो उठेगा। आइए जानें, शांत मन से जुड़े कुछ अनमोल विचार जो आपको अवसादरहित जीवन के लिए प्रेरित करें या आप उससे कुछ सीख सकें।

- घर के बाहर दिमाग लेकर जाओ क्योंकि दुनिया एक बाज़ार है, लेकिन घर के अंदर सिर्फ दिल लेकर जाओ क्योंकि वहां एक परिवार है।
- शब्द और दिमाग से दुनिया जीती है दिल तो आज भी दिल से ही जीता जाता है।
- दुनिया बड़ी जालिम है दोस्त, दिल से फसाती है और दिमाग से लूटती है।
- छाता और दिमाग तभी काम करते हैं, जब दोनों, खुले हो, बंद होने पर दोनों ही एक बोझ लगते हैं।
- पढ़ने से दिमाग खुलता है दुनिया देखने से आँखें।
- गीता का ज्ञान दिल और दिमाग दोनों खोल देता है लेकिन उसके लिए जरूरी है, कि आप गीता की किताब खोलें।

आपका मन ही आपकी वास्तविक शक्ति है। इसमें आने वाले विचार ही आपकी जिंदगी को हर पल आकार दे रहे हैं। दिमाग की संरचना को समझना जितना जटिल है, उतना ही जटिल मनुष्य के दिमाग में क्या चला रहा है इस बात को समझना है। स्वयं के दिमाग को नियंत्रित रखें और उसे अच्छे कार्यों में लगाएं। इंसान का दिमाग सृजनात्मक होना चाहिए ताकि वह मानव के भलाई में उत्तम कार्य कर सके और अपने जीवन के उद्देश्य को सार्थक कर सके।



श्री यशराज मिश्रा

लेखाकार

गया जी-ज्ञान और मोक्ष की स्थली

बिहार राज्य के दक्षिण हिस्से में अवस्थित जिला है गया जी। मुक्तिधाम के रूप में प्रसिद्ध गया को केवल गया न कहकर आदरपूर्वक 'गया जी' कहा जाता है। गया का उल्लेख हिंदू महाकाव्यों रामायण और महाभारत में मिलता है। बिहार प्रांत के मगध मंडल में स्थित 05 जिलों में से एक है गया जी। वायु पुराण में कहा गया है कि गया एक राक्षस (असुर) का नाम था जिसका शरीर कठोर तपस्या करने और भगवान विष्णु से आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद पवित्र हो गया था। ऐसा कहा गया था कि गयासुर का शरीर गया क्षेत्र के नाम से जाना जाता रहेगा। इसके पीछे की एक बहुत ही रोचक कहानी है। गयासुर ने परमपिता ब्रह्मा से वरदान मांगा कि उसका शरीर देवताओं की तरह पवित्र हो जाए और हर व्यक्ति उसके दर्शन मात्र से ही पाप मुक्त हो जाए। इसके बाद लोग बिना भय के पाप करने लगे और गयासुर के दर्शन मात्र से पाप मुक्त होने लगे। गयासुर के इस वरदान के कारण स्वर्ग में भी काफी भीड़ बढ़ गई। फिर परेशान देवताओं ने गयासुर से यज्ञ करने के लिए पवित्र स्थल की मांग की। गयासुर ने देवताओं को उसके शरीर पर यज्ञ करने को कहा और वह इसके लिए लेट गया। गयासुर जब लेटा तो वह पांच कोस में फैल गया। कहते हैं कि इसी पांच कोस में गया फैला हुआ है। गयासुर के मन से लोगों को पाप से मुक्त करने की इच्छा कभी खत्म नहीं हुई और उसने देवताओं से यह वरदान मांगा कि यह स्थान लोगों को मोक्ष देने के लिए बना रहे। उसने देवताओं से यह वरदान मांगा कि जो भी लोग यहां पिंडदान करेंगे उन्हें तुरंत मुक्ति मिल जाए। इसके बाद खुद भगवान विष्णु ने अपना दाहिना पैर गयासुर के ऊपर रखा। इसी के चलते गया के प्रसिद्ध विष्णुपद मंदिर में भगवान विष्णु की पैर उठाए हुए मूर्ति मौजूद है। इस मंदिर में लोग बहुत दूर से दर्शन और तर्पण करने आते हैं। गया जी बिहार के प्रमुख तीर्थ स्थानों में से एक है। गया जी की प्रसिद्धि एक प्रमुख धार्मिक नगरी के रूप में है। केवल रामायण ही नहीं बल्कि मौर्यकाल के अवशेषों में भी गया जी का उल्लेख मिलता है। गया जी फल्गु नदी के किनारे अवस्थित है जिस नदी के तट पर त्रेता युग में भगवान राम ने, माता सीता और लक्ष्मण जी सहित अपने पिता दशरथ जी का

पिंडदान किया था। हिन्दू धर्म में इस मंदिर को अहम स्थान प्राप्त है। गयापितृदान के लिए भी प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि यहां फल्गु नदी के तट पर पिंडदान करने से मृत व्यक्ति को बैकुण्ठ की प्राप्ति होती है।

फल्गु नदी के पश्चिमी किनारे पर स्थित यह मंदिर पर्यटकों के बीच काफी लोकप्रिय है। कहा जाता है कि इस मंदिर का निर्माण भगवान विष्णु के पद चिन्हों पर किया गया है। यह मंदिर 30 मीटर ऊंचा है जिसमें आठ खंभे हैं। इन खंभों पर चांदी की परतें चढ़ाई हुई हैं। मंदिर के गर्भगृह में भगवान विष्णु के 40 सेंटीमीटर लंबे पांव के निशान हैं। इस मंदिर का 1787 में इंदौर की महारानी अहिल्या बाई ने नवीकरण करवाया था। पितृपक्ष के अवसर पर यहां श्रद्धालुओं की काफी भीड़ जुटती है। गया जी से लगभग 13 किलोमीटर दूर राष्ट्रीय राजमार्ग 83 पर स्थित स्थान है- बोधगया। जिसका महत्व बौद्ध धर्म के परिपेक्ष्य में अत्यंत पवित्र है। बोधगया ऐतिहासिक दृष्टिकोण से बौद्ध धर्म के अनुयायी लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र है। यहीं स्थित है महाबोधी मंदिर में वह बोधी वृक्ष जिसके नीचे भगवान बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। साथ ही यहां भगवान बुद्ध की बहुत बड़ी प्रतिमा भी स्थापित की गई है। महाबोधि मंदिर गया स्टेशन से केवल 16 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

गया के आसपास की पहाड़ियों को भी हिंदू लोग पवित्र दृष्टि से देखते हैं। उन पर कई मंदिर बने हुए हैं। इन पहाड़ियों में गया के दक्षिण का ब्रह्म योनि पहाड़ सबसे ऊंचा है। इसकी ऊंचाई 450 फीट है। पहाड़ के ऊपर एक गुफा है जिसे लोग ब्रह्म योनि कहते हैं। सनातनी हिंदुओं का कहना है कि जो इसके अंदर प्रवेश करता है वह पुनर्जन्म से मुक्त हो जाता है। पहाड़ी पर ब्रह्म की एक मूर्ति भी है जो 1633 ईस्वी प्राचीन मानी जाती है। शहर से उत्तर एक रामशिला पहाड़ी है जहां एक मंदिर में शिवलिंग है, जिसे लोग पातालेश्वर महादेव कहते हैं। मंदिर के नीचे का भाग 1014 ईस्वी का बना हुआ है।

महाबोधि मंदिर यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल भी है। साल 2002 में महाबोधि मंदिर को यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता दी गई। बोध गया में अनेक दर्शनीय बौद्ध मंदिर हैं जहाँ पूरे साल पर्यटकों का आवागमन लगा रहता है।



तुम इतना तेज जो गाड़ी चला रहे हो

रणवीर कुमार
लेखाकार

तुम इतना तेज जो गाड़ी चला रहे हो
क्या रेस में जोर आजमा रहे हो।
पीली बत्ती देखकर भी न ब्रेक लगा रहे हो
लाल बत्ती देखकर पुलिस वाले से डरे जा रहे हो।

तुम इतना तेज जो गाड़ी चला रहे हो
क्या ट्रेन पकड़ने जा रहे हो।
अगल-बगल वालो का ख्याल नहीं है तुम्हें
आगे-पीछे वालो को भी डरा रहे हो।
तुम इतना तेज जो गाड़ी चला रहे हो
क्या भूतों के डर से भागे जा रहे हो।
दूसरों की जान की चिंता तो नहीं है तुम्हें
थोड़ा खुद की चिंता भी नहीं कर पी रहे हो।

तुम इतना तेज जो गाड़ी चला रहे हो
क्या खुदको माइकल सुमाकर समझे जा रहे हो।
उम्र कोई भी हो तुम्हारी इस आदत से बाज नहीं आ रहे हो
शिक्षित भी हो, सभ्य भी हो तुम थोड़ी ड्राइविंग सभ्यता भी सीख
लो तुम।

तुम इतना तेज जो गाड़ी चला रहे हो
क्या खुद को सड़क का मालिक समझे जा रहे हो।
तुमने तो सिर्फ रोड टैक्स दिया है इसके उपयोग के लिए
फिर इसको अपनी मिलकीयत क्यों समझे जा रहे हो।
तुम इतना तेज जो गाड़ी चला रहे हो
क्या रेस में जोर आजमा रहे हो।



जिंदगी या ज़हर

मनोहर कुमार झा
सहायक लेखा अधिकारी

अंदर से टूट गया हूँ, दर्द से भी रूठ गया हूँ
अब चाहत नहीं है राहत की...
अब कोई आह नहीं, कोई चाह नहीं
और कोई राह नहीं...
पास में कोई अपना नहीं, आंखों में कोई सपना नहीं

झकझोर! ये जिंदगी अंदर से कराहती
पता नहीं मौन होकर ये, किसको इतनी जोर से पुकारती?
भूत भी रूठ गया है, भविष्य भी फूट गया है और
हिम्मत भी अब टूट गया है।

मैं सपनों के आशा रूपी महलों में रहने वाला,
आज निराशा काल कोठरी में आया हूँ...
देखों क्या खूब स्वागत हुआ है यहां मेरा,
सहम गया हूँ और खुद से ही भयभीत हूँ,

न सोने को निद्रा है और न ही जगने की चाह
न रोने को आंसू है और न हंसने की चाह
यह जिंदगी है या ज़हर, मैं ये सोचने को मजबूर हूँ...
आंखों में आंसू नहीं, फिर भी मैं रोने को मजबूर हूँ

अंदर से टूट गया हूँ, दर्द से रूठ गया हूँ
अब चाहत नहीं राहत की....



मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ पर मेरे देश में हिंदी की
इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता

- आचार्य विनोबा भावे

चौथा बंदर



रूपा कुमारी

वरिष्ठ अनुवादक

मानव ईश्वर की सबसे प्रबुद्ध रचनाओं में से एक है। सभ्यता के विकास के पूर्व मानव पूँछवाला एक बंदर था जो पशुओं की भाँति जंगलों में झुंड में रहा करता था। धीरे-धीरे सभ्यता के विकास के साथ मानव वानर से एक बुद्धिमान मनुष्य में परिवर्तित हुआ। जंगलों का स्थान गाँवों और विकसित शहरों ने ले लिया। मानव ने अनेक अद्भुत आविष्कार किए और आविष्कारों का ये सिलसिला अब तक जारी है। आज हम जंगलों में निवास करने वाले आदिमानव युग से डिजिटल युग में प्रवेश कर चंद्रमा तक पहुँच चुके हैं। हमने मानव जीवन को आसान करने वाली प्रत्येक आवश्यकताओं को अपने वश में कर लिया है जो उँगलियों के थिरकने मात्र ही हमें उपलब्ध हो जाती है। परन्तु इन सब युगान्तकारी आविष्कारों एवं क्रांतिकारी परिवर्तनों के बावजूद भी मानव ने बहुत कुछ खोया है जिसका हिसाब लगाना मुश्किल है। आज डिजिटल युग में विचरण करते हुए मानव स्वयं एक मशीन बन चुका है जिसमें सुकून, शांति, भाईचारे और खुशियों जैसी कोई भी संवेदना नहीं बची है। लोग दिखावे के जीवन, प्रतिस्पर्धा और एक-दूसरे पर वर्चस्व स्थापित करने की होड़ में संवेदनहीन हो चुके हैं। सभ्यता के विकास ने बंदर को प्रबुद्ध मनुष्य में परिणत किया था परन्तु विकास की अति ने अब मनुष्य को पुनः एक बंदर बना दिया है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने भी सत्य और अहिंसा के पथ पर चलने हेतु जिन तीन बंदरों का उल्लेख किया था उनसे तो हम सभी भलिभाँति अवगत हैं परन्तु वर्तमान युग में एक चौथे बंदर का अवतरण हुआ है। इस चौथे बंदर की सबसे बड़ी विशेषता इसकी संवेदनहीनता है जो सब देखते समझते हुए भी अपनी आँखें, मुँह एवं कान बंद रखकर अंधा, गुँगा और बहरा बना रहता है। वह स्वहिताय को वरीयता देने तथा अपनी चालाकी, धोखे एवं सफाई से भोले-भाले लोगों को ठगने, उनका दोहन करने में दक्ष है।

**“लंबी उमर मिली है, खुश हैं तीनों बंदर बापू के
दिल की कली खिली है, खुश हैं तीनों बंदर बापू के
बूढ़े हैं, फिर भी जवान हैं तीनों बंदर बापू के
परम चतुर हैं, अति सुजान हैं तीनों बंदर बापू के।”**

-बाबा नागार्जुन

वर्तमान में मानवीय मूल्यों, आदर्शों, संवेदनाओं एवं

अच्छाई के प्रति उदासीनता आ गई है और सभी के अंदर एक चौथे बंदर अर्थात् संवेदनहीनता, चालाकी एवं धोखेधड़ी जैसी बुराईयों ने इस कदर अपनी पैठ बना ली है कि चाह कर भी लोग स्वयं को उससे दूर नहीं रख पाते। गांधी जी के तीनों बंदरों का उद्देश्य बहुत ही पवित्र एवं मानवीय है। वे आँख बंद किए रहते हैं ताकि बुराई को न देखें। बुराई को देखकर मनुष्य स्वयं बुराई करने के लिए प्रेरित होता है। अतः मनुष्य को इस तरह बुराई से दूर रहने की प्रेरणा दी गई है। दूसरा बंदर बुराई न सुनने के लिए कहता है। दूसरे की बुराई सुनने वाले व्यक्ति के मन में भी बुराई आ सकती है। अतः उसे ऐसा करने से रोका गया है। इसी तरह तीसरा बंदर मुँह बंद करके बताना चाहता है कि हम बुरा नहीं बोलेंगे और बुराई को मुँह से नहीं निकालने के लिए प्रेरित किया गया है। इस तरह मनुष्य को पवित्रता की ओर बढ़ाया गया है।

आज का मानव वही चौथा बंदर बन चुका है जो आँखों के समक्ष बड़ी से बड़ी घटना घटित होने के बावजूद भी 'किसी के पचड़े में क्या पड़ना?' की भावना लेकर आँखें चुराकर ऐसे आगे बढ़ जाता है जैसे कि कुछ हुआ ही नहीं। इसका परिणाम यह होता है कि जहां एक ओर अपराध बढ़ रहे हैं वहीं सांप्रदायिक सौहार्द, भाईचारे तथा सर्व हिताय की भावना खत्म हो रही है साथ ही दुष्टों का मनोबल बढ़ रहा है। संसार में दो प्रकार के मनुष्य हैं- शोषक और शोषित। शोषण करने वाला (शोषक) वर्तमान युग के इस चौथे बंदर की संवेदनहीनता को अपना हथियार बनाकर निर्भय व दबंग की तरह शोषण जारी रखता है। इस चौथे बंदर की विशेषताओं को लोगों ने इस प्रकार आत्मसात् कर लिया है मानों वो एक संवेदहीन मशीन हों। इसके विपरीत सरल एवं सत्य की राह में चलनेवाले लोगों की आवाज जब बार-बार अन्याय का विरोध करने पर भी दूषित मानसिकता वाले लोगों द्वारा दबा दी जाती है तो वे भी मानसिक अवसाद का शिकार हो उन्हीं की तरह बन जाते हैं -

**“कौरव कौन, कौन पांडव, टेढ़ा सवाल है
दोनों ओर शकुनि का फैला कूट जाल है।”**

-अटल बिहारी वाजपेयी

खुशी, शांति एवं भाईचारे की जगह आज सभी सुख-सुविधाओं के बावजूद मानव अवसाद (Depression) एवं

मानसिक रोगों से घिरा हुआ एक चिड़चिड़ा संवेदनहीन पुतला है जिसका श्रेय कुछ हद तक इस चौथे बंदर एवं हमारे द्वारा किसी भी अन्याय को देखकर उससे बच निकलने की मानसिकता को दिया जा सकता है। एक स्वस्थ मनुष्य को केवल 'रोग की अनुपस्थिति' अथवा 'शारीरिक स्वस्थता' से परिभाषित नहीं किया जा सकता। उसे पूर्णरूपेण स्वस्थ तभी कहा जा सकता है जब वह शारीरिक, मानसिक और वैचारिक रूप से स्वस्थ एवं अवसाद रहित हो। मानसिक विकार में अवसाद दुनिया भर में सबसे बड़ी समस्या है जो मनुष्य के सोचने, समझने, महसूस करने और कार्य करने की क्षमता को प्रभावित करता है। साथ ही यह कई सामाजिक समस्याओं जैसे-बेरोज़गारी, गरीबी और नशाखोरी आदि को भी जन्म देती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारत की 7.5 फीसदी आबादी किसी-न-किसी मानसिक समस्या से जूझ रही है। विश्व में मानसिक और न्यूरोलॉजिकल बीमारियों की समस्या से जूझ रहे लोगों में भारत का करीब 15 प्रतिशत हिस्सा शामिल है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, 450 मिलियन लोग वैश्विक स्तर पर मानसिक विकार से पीड़ित हैं। विश्व में चार व्यक्तियों में से एक व्यक्ति जीवन के किसी मोड़ पर मानसिक विकार या तंत्रिका संबंधी विकारों से प्रभावित है जो आत्महत्या अथवा आत्महत्या की कोशिश जैसी घटनाओं का मूल माना गया है।

मनुष्यता तो सदियों से परहित में ही मानी गई है परन्तु आज की समस्या केवल संवेदनहीनता ही नहीं बल्कि अच्छाई एवं बुराई के प्रति उदासीन हो केवल स्वयं की स्वार्थ सिद्धी पर केंद्रित मानसिकता है। ऐसी मानसिकता न तो परिवार अथवा समाज बल्कि समूचे राष्ट्र के लिए घातक हो सकती है। अब प्रश्न यह उठता है कि हम ही क्यों अच्छाई का तिरंगा लहराएं? केवल एक के बदलने एवं आदर्शों को अपनाने से तो क्रांति नहीं आ सकती? क्या हमारे अनदेखी न करने या अन्याय के प्रति आवाज उठाने से अपराध एवं अन्य घटनाएं घटित होनी बंद हो जाएगी?

इसका उत्तर बहुत ही सरल है कि परिवर्तन की इच्छा रखने एवं अच्छाई को बढ़ावा देने के लिए पहले स्वार्थ के पिंजड़े से बाहर निकल कर खुद की मानसिकता में परिवर्तन लाना होगा। हाँ, यह सत्य है कि केवल एक के बदलने से क्रांति नहीं आ सकती लेकिन शुरूआत तो हो सकती है जो समय के साथ

क्रांति में भी अवश्य परिवर्तित हो जाएगी। हर सिक्के के दो पहलू होते हैं- सकारात्मक एवं नकारात्मक। उजाले को पहचान भी अंधेरे ने ही दी है। यदि कड़ी धूप न हो तो छाँव की ठंडक का सुखद एहसास भी कभी नहीं होगा। अतः आवश्यकता है तो बस सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ने और नकारात्मक विचारों एवं लोगों की अनदेखी करने की क्योंकि सत्य एवं अच्छाई थोड़े समय के लिए परेशान अवश्य हो सकती है परन्तु पराजित नहीं।

यह कहना अधिक न होगा कि केवल कथित तौर पर ही नहीं बल्कि असल जिंदगी में भी हम नकारात्मक सोच एवं चौथे बंदर से दूरी बनाएं और सकारात्मकता को आत्मसात करें। अच्छाई ही अच्छाई को प्रेरित कर सकती है इसलिए आदर्श मूल्यों एवं विचारों को अपनाने के लिए दूसरों को भी प्रेरित करें। व्यर्थ की बातों पर अपना समय नष्ट न कर अपने कौशल-विकास पर ध्यान केंद्रित करें जिससे समाज एवं राष्ट्र का विकास हो तथा आत्मविश्वास को भी मजबूती मिले। सदैव खुश रहें और खुशियां बाँटें क्योंकि जिंदगी को केवल व्यतीत करना नहीं अपितु पूरी तरह जीना ही जीवन को सार्थक बनाता है। अतः एक अच्छे जिम्मेदार नागरिक के रूप में भी हमारा कर्तव्य है कि हम अन्याय को देखकर उसकी अनदेखी न करें अथवा उससे बच निकलने में ही स्वयं का हित न समझें क्योंकि अन्याय को सहन करना भी उसे बढ़ावा देने के समान है। किसी भी नकारात्मक कृत्य का विरोध करने और अन्याय के विरुद्ध में प्रश्न पूछने की मानसिकता का विकास करें जो अन्याय एवं बड़े से बड़े अपराध को होने से रोक सकता है। साथ ही अवसाद एवं मानसिक विकारों से घिरे व्यक्ति को अवसाद से बाहर निकालने एवं सकारात्मकता के प्रति प्रेरित करने का हर संभव प्रयास करें। एक नया सवेरा तभी होगा जब दूसरों से क्रांति या बदलाव की अपेक्षा न कर स्वयं को स्वार्थ एवं संवेदनहीनता के प्रतीक चौथे बंदर से दूर रखा जाए और स्वयं में बदलाव किया जाए। इस प्रसंग में स्वर्गीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की निम्नलिखित पंक्तियां बहुत ही प्रेरणादायी एवं जीवंत हैं :-

**“भरी दुपहरी में अंधियारा,
सूरज परछाई से हारा,
अंतरम का नेह निचोड़े, बुझी हुई बाती सुलगाएं,
आओ फिर से दिया जलाएं।”**



अभिषेक कुमार

पति- सोनी कुमारी साव, लेखाकार

गोटीपुआ : ओड़िशा का एक नृत्य-नाट्य

गोटीपुआ एक प्रकार का नृत्यनाट्य है जिसका उद्भव जगन्नाथ मंदिर में पंद्रहवीं शताब्दी में माना जाता है। इस लोकनाट्य पर जयदेव के गीतगोविंद का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है। कालान्तर में मुस्लिमों के आक्रमण से रक्षार्थ मंदिर की प्रतिमाओं को चूने या खड़िया से आवृत कर दिया गया तथा वहां के उन सेवादारों के लिए मंदिर के बाहर अखाड़ों की स्थापना कर दी गई जो मंदिर में नर्तकों को प्रशिक्षण दिया करते थे। गोटीपुआ का दार्शनिक पक्ष कृष्ण ही एकमात्र पुरुष हैं और शेष सभी भक्तजन गोपियां हैं। रामानन्द राय एक कट्टर वैष्णव भक्त थे और वे सखी संप्रदाय के पक्के अनुयायी थे। उन्होंने ही जगन्नाथ मंदिर में इस परंपरा को आरंभ किया कि स्त्रियों के बजाय मंदिर में नर्तक ही स्त्रीवेश में भगवान के सम्मुख मंडप में नृत्य करेंगे। इस प्रकार से गोटीपुआ नृत्यनाट्य का उद्भव हुआ।

नृत्य अध्येताओं के मतानुसार गोटीपुआ का उद्भव ओड़िशा नृत्य से हुआ है क्योंकि मंदिर के सेवादारों ने ही अखाड़ों में प्रशिक्षण आरंभ किया था जबकि कुछ अन्य अध्येता यह मानते हैं कि गोटीपुआ से ओड़िशी का उद्भव हुआ है। प्रसिद्ध ओड़िशी गुरु एवं नर्तक आरंभ में गोटीपुआ नर्तक थे। उन्होंने मंदिर की बाह्य भीतियों पर लगी हुई अप्सराओं की प्रतिमाओं से प्रभावित होकर ओड़िशी नृत्य प्रारंभ किया। इन प्रतिमाओं की भाव-भंगिमाओं एवं आंगिक चेष्टाओं से प्रभावित होकर उन्होंने ओड़िशी नृत्य में ग्रहण किया था। गोटीपुआ नर्तक एवं प्रशिक्षक होने के कारण उनका बदन इतना लचीला था कि वे सहज ही उन प्रतिमाओं को ओड़िशी में साकार कर सकें।

गोटीपुआ को एक स्वतंत्र नृत्य-नाट्य के रूप में भोई शासक रामचन्द्र देव के समक्ष सन् 1600 के आस-पास महत्व मिला। रामचन्द्र देव ने मंदिर की पूजा एवं अनुष्ठानिक

परंपराओं को बचाए रखने की दृष्टि से मंदिर के बाहर इस कार्य हेतु सालमार्गों का निर्माण करवाया और उनमें अखाड़ों की स्थापना की। इन अखाड़ों में ही अन्य परंपराओं के साथ ही गोटीपुआ नृत्य का भी प्रशिक्षण दिया जाता था। गोटीपुआ सीखने वाले बालकों को अखाड़ा विला कहा जाता था। ये एक प्रकार की व्यायाम शालाएं थीं जिनमें प्रशिक्षण देने का कार्य नृत्य पारंगत गुरु किया करते थे।

प्रशिक्षण-बालकों की सात वर्ष की उम्र से ही गोटीपुआ नृत्यनाट्य का प्रशिक्षण दिया जाना आरंभ हो जाता है। सामान्यतः अठारह वर्ष के पश्चात नर्तक गोटीपुआ प्रदर्शन में भाग नहीं लेते और वे प्रशिक्षक बन जाते हैं। ओड़िशी नृत्य का उद्भव भी गोटीपुआ नृत्य से माना जाता है। अठारह वर्ष के होने पर वे नर्तक ओड़िशी नृत्य में सक्रिय हो जाते हैं। प्रशिक्षण में प्रशिक्षणार्थियों को कठिन अभ्यास से गुजरना पड़ता है ताकि उनका बदन लचीला बना सके। प्रशिक्षण में नृत्य के साथ-साथ गायन तथा संगीत भी सीखना आवश्यक है क्योंकि ये गोटीपुआ के आवश्यक अंग हैं। गोटीपुआ के प्रदर्शन के समय नर्तकों को संगीत, धुन पर गायन भी करना पड़ता है।

गोटीपुआ कलाकार तीज-त्यौहारों पर एवं मेलों में



अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। साथ ही गांवों में भी घूम-घूम कर प्रदर्शन करते हैं। परंपरागत रूप से गोटीपुआ का आयोजन पुरी में चन्दन जात्रा और झूलन जात्रा के अवसर पर किया जाता है। जिस समय भगवान जगन्नाथ की यात्रा चन्दन पोखरी पर जाती है उस अवसर पर गोटीपुआ का आयोजन दो बातों को जोड़कर उन पर आयोजित किया जाता है। यह कार्यक्रम 21 दिनों तक चलता है जिसमें प्रत्येक दिन पृथक-पृथक गोटीपुआ दल को अवसर मिलता है।

वेशभूषा एवं अंगराज: सत्रहवीं शताब्दी के उड़िया ताड़पत्र पंजी अभिनय चन्द्रिका में गोटीपुआ की वेशभूषा (अंगराज का वर्णन किया गया है।) इसके लेखक महेश्वर महापात्र थे। यह पंजी, वर्तमान ओडिशी गुरु कवि चन्द्र कालीचरण पटनायक के पास है। शृंगराज में चेहरे पर हल्के पीले रंग के चूर्ण का लेप लिया जाता है। नेत्रों को बड़ा एवं प्रभावशील बनाने के लिए नेत्र और भवों पर काजल का उपयोग किया जाता है। काजल इस प्रकार से लगाया जाता है कि नेत्र बड़े और प्रभावशाली लगे।



मस्तक एवं चेहरे की बेलबूटों की आकृतियों से मधुमक्खी का प्रतीक चित्र बनाया जाता है। केश शृंगार हेतु फूलों की वेणी का उपयोग होता है।

अभिनय चन्द्रिका में शृंगार हेतु प्रयोग में लाए जाने वाले आभूषणों का उल्लेख किया गया है, चन्द्र, अल्का, केतक जो सब केश सज्जा में प्रयुक्त होते हैं। कर्ण आभूषण कूपा, अनेक प्रकार के सर कमहार, बांहों के लिए ताड़ता और कलेई हेतु करकन कंचन तथा कटि हेतु बेगायुतिभा या रजत निर्मित करधन। वस्त्रों में रेशम की पट्ट साड़ी जो गहरे चमकदार रंग की होती है उसे पहनते हैं। इनमें लाल रंग की साड़ी को सर्वाधिक पसन्द किया जाता है। चोली तथा कुरती (ब्लाउज) भी चमकीले रंग का रेशम का बना होता है जिस पर कृत्रिम नग जड़े होते हैं। कटि-प्रदेश पर दुपट्टे के सदृश्य एक रेशमी वस्त्र बंधता है। वेशभूषा में परंपरागत देवदासी परंपरा का पूरा पालन किया

जाता है। गोटीपुआ का शृंगार एक युवती की भांति किया जाता है। नृत्य के आरंभ में गुरु गोटीपुआ के पैरों में घुंघरू बांध कर उसे आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

प्रदर्शन: गोटीपुआ का प्रदर्शन भगवान जगन्नाथ की आराधना के साथ आरंभ होता है। नर्तक आराधना के पश्चात अपने गुरु का चरण स्पर्श कर उनका आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। गुरु पखावज बजाते हैं। इसके अधिकांश प्रसंग या तो जयदेव कृत गीतगोविंद पर आधारित है या पुराण कथाओं पर। नृत्य प्रस्तुत करते समय नर्तक स्वयं भी गायन करता है। गोटीपुआ सामान्य रूप से मंदिरों के प्रांगण में आयोजित होते हैं। चन्दन पोखरी का आयोजन नावों पर किया जाता है। इस प्रदर्शन हेतु

दो नावों को जोड़ कर मंच का निर्माण किया जाता है। झूलन यात्रा तथा आयोजन मंदिरों के झूलन मंडप या मुक्ति-मंडप में आयोजित होता है।

अनेक ग्रामों एवं कस्बों में गोटीपुआ यहां के भूतपूर्व राजाओं एवं जमींदारों के निवास के प्रांगण में आयोजित होते हैं। पूर्व में भी गोटीपुआ के दिलों को मठों एवं जमींदारों का

संरक्षण प्राप्त होता था। कुछ जमींदारों ने तो मनोरंजन हेतु अपने स्वयं के भी गोटीपुआ अखाड़े स्थापित कर रखे थे जिनसे वे अपने परिजनों, मित्रों तथा अतिथियों का मनोरंजन करवाते थे। इधर बीस-पच्चीस वर्षों में इन नृत्यनाट्य में भी विकृतियां आने लगी हैं। दक्षिण के तेलुगु भाषी क्षेत्र के साखीनाच का प्रभाव गोटीपुआ पर स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ने लगा है। साखीनाच के नृत्य अत्यन्त उत्तेजक एवं शृंगारिक होते हैं तथा उसमें नर्तकों की वेशभूषा को अधिकाधिक सेंद्रिक में प्रस्तुत किया जाता है। बहुत से पुराने गुरु जो वर्तमान में ओडिशी नृत्य से जुड़े हुए हैं, वे इस नृत्य नाट्य के मूलस्वरूप को बचाने के प्रति सजग हैं। ओडिशा सरकार के सहयोग से कंटीलों नामक कस्बे में गोटीपुआ प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की गई है। ओडिशा सांस्कृतिक रूप से एक समृद्ध प्रदेश है। आशा की जानी चाहिए कि नाट्य गुरुओं का यह प्रयास सफल होगा।



प्रिय चंदन कुमार

सहायक लेखा अधिकारी

आदर्श भी और शिक्षक भी

मैं जब पाँच वर्ष का हुआ तब मेरी माँ पहली बार मुझे सरकारी प्राथमिक स्कूल में मेरा दाखिला कराने के लिए ले गई। मैं बहुत उत्सुक था क्योंकि मैं पहली बार विद्या के मंदिर में कदम रख रहा था। स्कूल में प्रवेश करते ही अचानक मैंने एक ऐसे अदृष्ट एवं तेजस्वी व्यक्ति को देखा मानो स्वयं भगवान प्रकट हुए हों। वह व्यक्ति कोई और नहीं बल्कि मेरे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले मेरे गुरुजी थे जो अकेले पूरे पांच कक्षाओं को पढ़ाते थे। स्कूल में दाखिले के बाद मैंने अपनी माँ से पूछा, 'माँ! मैं यहाँ पढ़ूँगा कैसे? यहाँ तो बस एक ही शिक्षक है।' मेरी माँ उन्हें पहले से जानती थी। उन्होंने हँसकर जवाब दिया, 'बेटा तुम चिंता मत करो और जैसे तुम्हें गुरु जी बोलेंगे वैसे करना।' मैंने जब कक्षा के अंदर प्रवेश किया तो पाया कि सभी बच्चों कक्षा में बैठकर पढ़ रहे थे। एक कुर्सी और टेबल ठीक बीच वाले कमरे में लगी हुई थी परन्तु गुरुजी बच्चों के साथ जमीन पर बैठे हुए थे और पाँचों कक्षाओं पर समान ध्यान रखते हुए पढ़ा रहे थे। हमारी कक्षा सुबह 10.00 बजे से शुरू होती थी पर हमारे गुरुजी सारे बच्चों को 9 बजे ही बुलाते थे। सभी बच्चों ठीक समय पर आ जाते और हम सभी छात्र मिलकर स्कूल के चारों ओर जो कूड़ा-कचड़ा होता उसे साफ करते और व्यायाम करने के बाद हमारी कक्षा शुरू होती थी। गुरुजी हमेशा कहते थे कि यह मंदिर के समकक्ष है जहाँ आपको अपनी पहचान और सभ्य समाज में रहने का ज्ञान प्राप्त होगा। अतः हमारा कर्तव्य है कि हम इसे साफ, स्वच्छ एवं सुंदर रखें। हम सभी बच्चों को शनिवार को भी बुलाया जाता था और कहा जाता था कि एक किसी भी फूल का पौधा लेकर आए तथा उस पौधे को स्कूल के प्रांगण में कहीं भी लगा दें। जो बच्चा जिस पौधे को लगाता था उस पौधे की देखभाल की जिम्मेदारी भी उसी बच्चे की होती थी। इसके अलावा, हस्तकला को बढ़ावा देने के लिए गुरुजी हर शनिवार को चित्रकला कार्यक्रम भी करवाते थे तथा गांव के लोगों को भी बुलवाते थे ताकि उनका मनोबल बढ़ सके।

मुझे आज भी याद है कि हमारे विद्यालय में शिक्षा विभाग की एक टीम निरीक्षण करने आई थी। टीम में शिक्षा विभाग के बड़े-बड़े अधिकारी भी थे। जब वे स्कूल में आए तो

गुरुजी ने सारे कुर्सी मेज को निकाल दिया तथा पूरी टीम से यह आग्रह किया कि वे बच्चों के साथ नीचे बैठें। उनमें से एक अधिकारी ने प्रश्न किया कि क्या आप हमारे लिए कुर्सी टेबल की व्यवस्था नहीं कर सकते थे। हमारे गुरुजी ने बड़ी विनम्रता के साथ उत्तर दिया कि, 'महोदय कार्यालय का काम करने के लिए स्कूल में एक कुर्सी और टेबल है पर हमारे बच्चों को बैठने को लिए बेंच और डेस्क नहीं है, जब हमारे बच्चों नीचे बैठकर पढ़ सकते हैं तो आप क्यों नहीं?' यह सुनते ही सारे अधिकारी नीचे बैठ गए। गुरुजी ने उन अधिकारियों को हमारे द्वारा बनाई गई हस्त कलाओं और चित्रकलाओं को दिखाया। हमारे द्वारा किए गए कार्यों का निरीक्षण कर सारे अधिकारीगण बहुत खुश हुए। उन्होंने हमारे गुरुजी की बहुत प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि अकेले 200 से अधिक बच्चों को पढ़ाना और इतने कार्यक्रम का आयोजन करवाना बहुत ही सराहनीय कार्य है। इसके लिए हम आपको धन्यवाद एवं बहुत-बहुत बधाई देते हैं। यदि आप जैसे शिक्षक पूरे भारत के सभी स्कूलों में हो तो कोई भी गरीब बच्चा कभी शिक्षा से वंचित नहीं रहेगा। हमारे गुरुजी को 200 बच्चों का नाम याद था और यदि कोई बच्चा स्कूल नहीं आता था तो गुरुजी कुछ बच्चों को उसके घर भेजकर उसकी खबर लेते थे।

आज के निजी स्कूलों में मैं देखता हूँ कि माता-पिता के साथ बच्चों की शिक्षा संबंधी जानकारी के लिए शिक्षकों के साथ बैठक कराई जाती है जबकि हमारे गुरुजी उस समय भी सभी बच्चों के माता-पिता के साथ मीटिंग करते थे और शिक्षा उनकी जिंदगी में किस प्रकार से परिवर्तन ला सकता है इस विषय पर गहन चर्चा करते थे। मुझे आज भी याद है वह दिन जब मैं कक्षा-5 पास करके आखरी बार विद्यालय गया तो गुरुजी ने मुझसे वो बात बोली जिससे मेरी पूरी जिंदगी ही बदल गई। उन्होंने कहा, 'बेटा! शिक्षा एक ऐसी पूंजी है जिससे आपको सही और गलत का फर्क नजर आता है साथ ही शिक्षा का उपयोग अच्छे कार्यों के लिए किया जाना चाहिए।' इस बार जब मैं घर गया तब मन में आया कि एक बार अपने विद्यालय घूम आता हूँ। मन में कई स्मृतियाँ एक साथ याद आने लगी। कितना सुकून था उस जीवन में। स्कूल के प्रांगण में पहुँचते ही मुझे गुरुजी की याद

आ गई क्योंकि अब यह विद्यालय एक प्राथमिक स्कूल से एक माध्यमिक स्कूल बन चुका था। वहां दस से ज्यादा शिक्षक हो गए थे लेकिन गुरुजी के समय की हरियाली, सौन्दर्य एवं अनुशासन पढ़ाई सब कुछ खत्म हो गया था। अपने पहले की कक्षा को देखकर मैं भाव विभोर हो गया और घर आकर माँ को स्कूल के हालत के बारे में बताया। माँ ने कहा बेटा भगवान सबको नहीं मिलते हैं। तुम बहुत खुशनसीब हो कि तुम्हें भगवान स्वरूप शिक्षक की प्राप्ति हुई। मैंने उसके बाद कई शिक्षकों से शिक्षा ग्रहण की लेकिन शिक्षा के साथ स्वास्थ्य, वातावरण एवं समाज कल्याण के लिए जो काम हमारे गुरुजी ने सिखाया वह कहीं नहीं देखा। आप जीवन में बड़े से बड़े मुकाम पर पहुँच सकते हैं परन्तु वहीं अच्छाई, जीवन शैली एवं लोक कल्याणकारी कार्य के रूप में आप समाज को वापस क्या लौटा सकते हैं? यह कोई नहीं सिखाता।

आज के परिप्रेक्ष्य में या किसी भी काल-खण्ड में एक ऐसे ही आदर्श शिक्षक की आवश्यकता है। आज शिक्षा पर होने वाले खर्च से मध्यवर्गीय परिवार पर अनावश्यक बोझ डाला जा रहा है। फिर भी बच्चों में नैतिक शिक्षा की कमी स्पष्ट देखी जा

सकती है। मैं जिस क्षेत्र का निवासी हूँ, वहां गरीबी के कारण बच्चे स्कूल नहीं जा पाते थे। बच्चों को स्कूल के प्रति आकर्षित करने के लिए गुरुजी सप्ताह में एक दिन सुंदरकाण्ड का पाठ करवाते थे जिसमें हलवा, पुरी का प्रसाद पेटभर मिलता था। पूजा का आयोजन एक या एक से अधिक परिवारों के सहयोग से होता था। एक-एक घर जहाँ स्कूल जाने के लायक बच्चे होते थे गुरुजी स्वयं उनके माता-पिता से बातकर समझाकर उन्हें स्कूल बुलाते थे और उनका दाखिला करते थे।

विडम्बना यह है कि सरकार या अन्य संगठनों द्वारा ऐसे आदर्श, निःस्वर्थ शिक्षकों की न तो कोई सुध ली जाती है और न उन्हें उनके सराहनीय कार्य के लिए विशेष रूप से सम्मानित ही किया जाता है। ऐसे शिक्षकों को सम्मान अवश्य किया जाना चाहिए ताकि समाज के अन्य शिक्षकों में वैसा आदर्श स्थापित करने की चेतना जागृत हो। ऐसे शिक्षक बच्चों के मानस पटल पर सदैव अंकित रहते हैं और बच्चों के चरित्र-निर्माण में एक अहम भूमिका अदा करते हैं। धन्य हैं ऐसे शिक्षक! जो केवल पढ़ाते ही नहीं बल्कि चरित्र-निर्माण भी करते हैं।





महेंद्र कुमार शतपथी

सहायक पर्यवेक्षक

सुकुमार की डायरी का एक पन्ना

सावंत साहब ने बुलाया है।

काम आधा रखकर ही सुकुमार दत्त उठ गया। उसे पता है कि इस समय ऑफिस में सभी की निगाहें उसी पर है। सभी के चेहरे पर आतंक है। उसे यह भी पता है कि सावंत साहब उसे क्या कहने वाले हैं। चपरासी के अलावा वे किसी और को अपने चेम्बर में बुलाते ही नहीं और जब बुलाते हैं तो सबको पता होता है बुलावा किसलिए आया है।

सभी को अंदेशा हो गया था कि आज सुकुमार दत्त का फुल एंड फाइनल हो ही जाएगा। बेचारा...! कंपनी का अकाउंट्स क्लर्क मगर तनख्वा दिन के हिसाब से। जहाँ नौकरी की गारन्टी बॉस की मर्जी पर।

सुकुमार ने लापरवाही नहीं दिखाई ऐसी बात नहीं है। वह लापरवाह है, ऐसी बात भी नहीं है। हाँ, यह कह सकते हैं कि लापरवाही हो गई है।

कितनी अच्छी थी कोलकाता की वह जिंदगी। बाबा की स्टेशनरी दुकान, पत्नी केया, टिट्टु और बिट्टु को लेकर उसका परिवार। परन्तु दंगे ने उसे ढकेल दिया था- चार सौ मील दूर। कहाँ महानगरी कोलकाता और कहाँ मध्यप्रदेश का अख्यात शहर उमारिया। कैसे भी करके अपने परिवार को तो बचा लिया, लेकिन दंगे की भयावहता से अपने बाबा और उनकी दुकान को बचा नहीं पाया।

इससे पहले भी एक बार उन्नीस सौ एकहत्तर (1971) को ढाका से विस्थापित किए गए थे। क्या उम्र होगी तब सुकुमार की? यही कोई सात-आठ साल। अभी भी धुंधला-सा याद है- मौत के तांडव के बीच सुकुमार को अपने कंधे पर लादे दौड़ रहे थे बाबा और पीछे-पीछे साड़ी को सिमटाती हुई माँ। कोलकाता पहुंचने से पहले ही माँ गुम हो गयी, पता नहीं कहाँ!

शायद बाबा के सामने उस वक्त सुकुमार का जिंदा रहना अधिक महत्वपूर्ण था। लेकिन आज वह अपने उसी बाबा को दंगे से बचा नहीं पाया। शायद बार-बार बेघर होने से वे संसार छोड़ना ही बेहतर मान लिए।

केया और बच्चों को सुकुमार दीघा में अपने किसी दूर के रिश्तेदार के पास छोड़ आया है। ट्रेन में बिना टिकट

लिए गंतव्यहीन सफर करते-करते सुकुमार पता नहीं क्यों ठीक इसी शहर में उतर गया था, याद करने से भी याद नहीं आता है। बी.कॉम. पास सुकुमार ने इस छोटे से शहर में जिंदा रहने के लिए पहले होटल बॉय के रूप में काम किया, फिर शैक्षणिक योग्यता का पता चलने पर होटल मालिक ने उसे अपने बच्चों का होम ट्यूटर बना लिया था और तभी इस कम्पनी की ट्रांसमिशन लाइन प्रोजेक्ट की साइट ऑफिस यहाँ अचानक खुलने से उसे दैनिक पगार के आधार पर अकाउंट्स क्लर्क की नौकरी मील गयी।

चैन की सांस लेने के साथ-साथ काम भी बहुत ध्यान देकर करने लगा था। आश्वासन भी मिला था- काम अच्छा करने पर, जब प्रोजेक्ट खत्म हो जाएगा, तब हेड ऑफिस में नियमित नौकरी मील जाएगी। अकाउंट्स काम, जिम्मेदारी बहुत। उसे फिर समय रहते हुए प्रस्तुत करना होता है नहीं तो हेड ऑफिस से ग्रान्ट आने में विलम्ब हो जाता है। ठेकेदार पेमेंट के लिए हल्ला मचाने लगते हैं। मजदूर लोग पगार न मिलने पर हड़ताल पर बैठ जाते हैं। फिल्ड वर्ष ठप्प पड़ जाता है। अकाउंट्स की पेशी एक सप्ताह विलम्ब होने पर वर्क पीरियड एक महीना पीछे रह जाता है। सिर्फ इसी बजह से सुकुमार पिछले दो सालों से अपने परिवार के पास जा न सका। वह बहुत सावधानी से खाना, पीना और सोना सब संभल कर करता ताकि बीमार न पड़ जाए।

पर दो साल ईमानदारी से काम करते हुए भी सुकुमार से ऐसी गलती कैसे हो गयी! महीने की सत्ताइस तारीख यानी दो दिन देर हो गयी है। फिर भी वह अब तक अकाउंट्स प्रस्तुत कर नहीं पाया है। सुबह आठ बजे ऑफिस खुलते ही सावंत साहब सब के सामने जो मुँह में आया बक गए। दिन के दो बज गए थे। सुकुमार ने लंच भी नहीं किया था फिर भी काम खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा था।

सुकुमार सावंत साहब के चेम्बर में गया। सावंत ने साफ-साफ सुना दिया- "मैं काम में किसी तरह की लापरवाही बरदास्त करने वाला नहीं हूँ। शाम पांच बजे तक तुम कैसे भी करके काम पूरा करो और तुम्हरी पगार का हिसाब कर लो। आज से तुम्हारा फुल एंड फाइनल।"

ऐसे तो सुकुमार को पता था कि बस और एक घंटे का काम बचा था। फिर भी सावंत साहब के कमरे से बाहर आने के बाद वही काम करने में तीन घण्टे लग गए। पांच बजे सुकुमार सारे हिसाब-किताब के साथ सावंत साहब के चेम्बर में दाखिल हुआ। सावंत साहब ने एक नजर सुकुमार के चेहरे पर घुमाने के बाद सभी वाउचर्स की बारीकी से जांच की और दस्तखत करने लगे। सुकुमार वैसे ही खड़ा था। अंत में फॉर्वार्डिंग लेटर दस्तखत करते समय सुकुमार ने छः सौ नब्बे रूपए की अपनी पगार की रसीद सावंत साहब को दे दी। सावंत साहब ने रसीद को रखकर छः सौ नब्बे रूपए गिने और सुकुमार को पकड़ा दिया। रूपए अपने जेब में रखते हुए सुकुमार चेम्बर से बाहर जाने के लिए मुड़ा।

“दत्त...”

बुलाने पर सुकुमार ने पीछे मुड़कर देखा।

“आओ, बैठो” ।

न चाहते हुए भी सुकुमार बैठा। सावंत साहब ने फ्लास्क खोला और दो कपों में चाय परोसा।

“लो, चाय लो” ।

सुकुमार को यह जले पर नमक डालने जैसा लगा। उसे मालूम है- सावंत पक्का व्यापारी है। सुकुमार जैसे कुशल कर्मचारी को निकालने से उसकी समस्या बढ़ जाएगी। दैनिक पगार पर सुकुमार जैसा एक कुशल कर्मचारी मिलना इतना आसान नहीं है। हेड ऑफिस से डेपुटेसन पर किसी के आने में भी समय लगेगा। इसलिये सावंत अब मस्का लगाने की कोशिश करेगा ।

सावंत ने फिर से दोहराया- “ले लो, चाय....”

“नहीं साहब” ।

“अरे लो यार, चलता है” ।

सुकुमार को केया और बच्चों के चेहरे और उसका अपना असहाय जीवन याद आया। चाय का कप उसे अंधेरे में दीये के समान लगा। सब जानते हुए, सब समझते हुए भी उसने मुँह नीचा कर के चाय के कप को होठों से लगाया ।

“क्यों? क्या कोई प्रोब्लम है?”

सुकुमार ने सर उठाकर सावंत साहब की तरफ देखा। सावंत साहब अपनी सिगरेट में आग लगा रहे थे। सुकुमार ने सोचा- अभी बता देगा कि दो साल हो गए, वह अपने परिवार से मिला नहीं और यह भी बताएगा- केया की चिट्ठी आई है जिसमें लिखा है कि खर्चे बढ़ रहे हैं, टिट्टु स्कूल जाने लगा है, कूपोषण से बिट्टु बीमार है, उसका अब उन लोगों के पास रहना ज़रूरी हो गया है। साफ साफ सुना देगा- पंद्रह दिन पहले प्रोग्रेस रिपोर्ट बनाने का जो अतिरिक्त काम उसे सौंपा गया था, उस काम के बदले कोई अतिरिक्त पगार तो नहीं दिया गया था। सलाह देगा- काम बढ़ गया है, एक सहायक चाहिए, अंततः उसी के भरोसे वह कुछ दिन घर हो आता। पूछ लेगा- इतने बड़े अधिकारी हो आप, इतनी छोटी-छोटी बातें क्या नहीं समझ रहे हो, यह सब पूछते हो?

पर सुकुमार कुछ न कह सका। वह बस चुप रहा। दुनिया भर की मजबूरियों ने जैसे उसे जकड़ रखा था। सावंत साहब ने रसीद के बदले पगार का पैसा उससे ले लिया ।

“कल से फिर ऑफिस आना और इस महीने ज़रा समय रहते काम निपटाने की कोशिश करना।”

सुकुमार ने सर हिलाया और सावंत साहब के पीछे-पीछे बाहर आ गया।



“राष्ट्रभाषा हिंदी हो जाने पर भी हमारे व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन पर विदेशी भाषा का प्रभुत्व अत्यंत गह्रित बात है।”

-कमलापति त्रिपाठी।



अमित कुमार

लेखाकार

झाड़ू करती बच्ची

ट्रेन में हल्की खुरचन की आवाज से गहरी नींद में खलल पड़ती है। अनायास ही हाथ पैंट की जेब में जा फोन टटोलता है। उसे वही सुरक्षित पा मन कहता है- 'देखो तो! उस रगड़न की आवाज का स्रोत क्या है।' एक बच्ची हाथ में छितराया झाड़ू थामे सबकी की तहों तक पहुंचने की जद्दोजहद कर रही थी। उसकी देह किसी मायूस इमोजी के होंठ भाँति मुड़ी हुई थी। उसका एक हाथ बहती नाक पोंछता, दूसरा मैले फर्श पर झाड़ू घुमा 'हमारी नाम काटता'।

बड़े करीने से पूरे डिब्बे का कचरा अंतिम छोर में इक्क ठाकर वह पीछे मुड़ती है। अब उसके हाथ की मुद्रा और भूमिका बदल गई है। एक हाथ कटोरा बना है और दूसरा ललाट और छाती को क्रमवार छू कर प्रणाम करने का संकेत कर रहा है। अन्य सभी जगहों की तरह बोगी में भी लोग दो अदृश्य गुटों में बँटे हैं। एक के भीतर दया फुटती है और सिक्का छलक पड़ता है, वहीं दूसरे की करूणा जाहिराना घिस कर भोथरा गई है।

छन् छन् सिक्के बजाती वह बच्ची पेट की तरफ संकेत करते अनुनय-विनय करते आगे बढ़ती है। शर्मिंदा होने की बारी अब मेरी आती हैं। मैं अपने पर्स तक पहुंचता ही हूँ कि उसका ध्यान मेरे पास रखे ठोंगे पर जाता है। बच्ची वह माँगने लगती है। मुझे बताया गया है कि गरीबों को खाना नहीं देते वरना वे पैसे ऐंठने के लिए मरने का अभिनय करने लगते हैं। उसकी दारूण मांग मुझे दी गई दुनियावी दलील पर हावी हो जाती है। इन बच्चों का पूरा जीवन आग्रह का अभिनय मात्र ही तो है। जिसमें दिले पसीजा पाने की जितनी क्षमता और बदहाली, उतनी शीघ्र और ज्यादा जेब ढीली। ये बच्चे जो हमसे सिक्कों की आस करते हैं क्या हमारा ऋण उनके प्रति सिक्कों का है?

प्याज की सतहों की भांति कई विचारों को किनारे करते हुए जब मैंने उसकी ओर देखा तो वह बच्ची झाड़ू कमर में खोसे मेरे नजरों से तो ओझल हो जाती है पर मन से नहीं हो पाती है।





अभिषेक कुमार

सहायक लेखा अधिकारी

वह पेड़ पुराना

वह पेड़ पुराना दशकों-शतकों पुराना ।
देखा है जिसने ये सारा जमाना, वह पेड़ पुराना।
करता आया जो महसूस बन बेला की पवन, दोपहर का आंगन
देखता आया जो सूरज की पहली किरण और सुनता आया
जो पक्षियों का गाना, वह पेड़ पुराना।
देखा है जिसने मेरा, तेरा और उसका बचपन,
और देखा है जिसने महलों का खंडहर हो जाना, वह पेड़ पुराना।
दिया है जिसने वन, फूल, हमें खुशियों के पल पर्यावरण को बल
जलते पांव को छांव।
आज क्यों नहीं रहा, उसी का भाव।
देखा है जिसने अनगिनत घोंसलों का बनना, बच्चों का पलना
और फिर एक दिन उनका उड़ जाना,
वह पेड़ पुराना।
देखा है जिसे हर बार पतझड़, लगभग मर कर
पर हर बार बसंत का आना और नवजीवन को पाना
वह पेड़ पुराना।
देखा है जिसने अनेक पीढ़ियों का जन्म, जवानी, जरा और
फिर एक दिन उनका मर जाना, वह पेड़ पुराना।
झेला जिसने झंझावातों को, काबू में रखा फिर भी अपने जज्बातों को
देखा जिसे अपनी ही डालियों का टूट जाना, वह पेड़ पुराना।
टूटा वह कई बार, पर समय के मरहम से फिर जुड़ते जाना,
फिर समय की माया से हर गम को भूल जाना।

वह पेड़ पुराना।
सीख सको तो मानो वह है ज्ञान का एक खजाना,
वह पेड़ पुराना।
पतझड़ है दुख, है एक दिन तय है इसका जाना और फिर
बसंत का आना
कहता है वह पेड़ पुराना।
जितना लिया है इस दुनिया से उससे अधिक करके लौटाना
कहता है वह पेड़ पुराना।
जीते जी दिया, फल-फूल, बच्चों-चिड़ियों और हम सबको
खुशियों के पल, पर्यावरण को बल, नहीं व्यर्थ होगा
उसका मर जाना, कहता है वह पेड़ पुराना।
मर कर भी पत्तियां खाद, डालियों का ईंधन बनकर रोटियां
बनवाना
और तने का किसी घर का चौखट-दरवाजा बन जाना।
फिर, सृष्टि का बनना-मिटना मौन रह कर देखते जाना।
वह पेड़ पुराना
गरीबों का घर बन जाना, बादलों को धरती पर बुलाना
परोपकार में जीवन बिटाना, बसंत में फूल बरसाना
फूल लगे तो झुक जाना, वह पेड़ पुराना।
सुनो तो इसके पत्तों की खर-खर, क्या कहता यह रह-रहकर
कि अगर पर्यावरण को है बचाना तो एक पेड़ हर साल लगाना।
कहता है वह पेड़ पुराना।



“समाज और राष्ट्र की भावनाओं को परिमार्जित करने वाला
साहित्य ही सच्चा साहित्य है।”

– जनार्दन प्रसाद झा द्विज।

ज्ञान कुंभ



दीपक यादव

सहायक लेखा अधिकारी

कहा जाता है की बूंद-बूंद से मिलकर एक विशाल सागर बन जाता है। इसी तरह कोई व्यक्ति सही मायने में ज्ञानी तब होता है, जब उसने अपने जीवन में ऐसे ही बूंद-बूंद करके ज्ञान के मोती सँजोए हों। ज्ञानरूपी मोती दिखाई तो सबको देता है परंतु उसका महत्व समझ के उसे ग्रहण करना भी एक कला है। यह कला व्यक्ति के ज्ञान को एक अलग स्तर पर ले जाती है। मगर यह कला यूं ही नहीं आ जाती, इसके लिए थोड़ा सा विचार और मस्तिष्क का उपयोग, विश्लेषण और सबसे महत्वपूर्ण “सत्य के प्रति समर्पण और सम्मान की भावना” का होना अत्यंत आवश्यक है।

मैं आज आपके सम्मुख ऐसे ही कुछ “ज्ञान कुंभों” को लेकर आया हूँ जिससे संभवतः आपके जीवन में ज्ञान की कुछ वृद्धि हो पाएगी। भले ही वह वृद्धि नगण्य हो। ऐसा करके मैं यहाँ स्वयं बड़ा ज्ञानी होने का दावा नहीं कर रहा हूँ बल्कि मैं बस कुछ ऐसी बातों को आपके सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ जो मैंने अपने जीवन के कई वर्षों के दौरान प्राप्त की हैं और जानी समझी। चाणक्य कहते हैं कि स्वर्ण यदि निम्न स्थान में भी पड़ा हो तो उसे उठा लेना चाहिए। उत्तम नारी यदि दुष्टों के घर में भी जन्म ले ली हो तो उसे खुद के लिए प्राप्त कर लेना चाहिए। इसी प्रकार ज्ञान कहीं से भी मिले उसे विनम्रता पूर्वक ग्रहण कर लेना चाहिए।

मैं कोई पेशेवर लेखक नहीं हूँ, हालाँकि लेखनी में मेरी अभिरुचि है। मैं अपनी और आपकी सुविधा के लिए अपनी बातों को कुछ छोटे-छोटे परिच्छेदों के रूप में प्रस्तुत करूँगा और आशा करता हूँ कि मेरी रचना को आप धैर्यपूर्वक समझने का प्रयास करेंगे, वह भी जो मैंने शब्दों में कह दिया है और वह भी जो मैंने अनकहा छोड़ दिया। यह सारी बातें मैंने अलग-अलग स्रोतों से कहीं न कहीं पढ़ी हैं या सुनी हैं और जितनी मेरी स्मरणशक्ति है, उस सीमा तक मैं इन यादों को गोदाम से निकालकर आपके सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ। यह सारी बातें शत-प्रतिशत सत्य घटनाओं से प्रेरित हैं और यदि आप कहीं और खोजेंगे तो इन्हें मूल रूप में भी पढ़ सकते हैं। इसलिए मेरे वर्णन में मूल से थोड़ा बहुत बदलाव हो सकता है जिसके लिए आप मुझे और मेरी स्मरण शक्ति को क्षमा करें। तो आइए आरंभ करते हैं।

“मन के हारे हार है मन के जीते जीत”

जापान में सदियों से दो परम्पराएँ विश्वविख्यात हैं- “समुराय योद्धा” और “जापानी चाय परोसने की कला” इनमें से पहली परम्परा थोड़ी अधिक विख्यात है, परंतु दूसरी का महत्व भी जापानी समाज में कुछ कम नहीं था। भले ही बाहर के लोग इसके बारे में ज्यादा नहीं जानते हैं। एक समुराय योद्धा इस कला को अपना सारा जीवन समर्पित कर देता था। ऐसा माना जाता था कि यदि किसी समुराय को दूसरों ने युद्ध की चुनौती दे दी तो उसे अपने सम्मान की रक्षा हेतु यह चुनौती स्वीकार ही करनी होती है। यदि चुनौती स्वीकार नहीं की तो ऐसे समुराय का अस्तित्व जीवनभर एक अपमानित व्यक्ति के रूप में बितता है। ऐसे ही जापान में टी मास्टर या हिंदी में कह



सकते हैं “चाय के उस्ताद” हुआ करते थे जो पारम्परिक तरीके से चाय पेश किया करते थे। समाज में उन्हें ऊँचा दर्जा प्राप्त था और जैसे हमारे समाज में समृद्ध उच्चवर्गीय लोग घरेलू नौकर रखते हैं वैसे ही जापान के रईस लोग खुद के लिए व्यक्तिगत “चाय उस्ताद” रखते थे। एक बार जापान में धन दौलत से संपन्न समाज के सर्वोच्च दर्जे से संबद्ध एक बड़े सामंत थे। अपनी शान के लिए अक्सर वे सामंत चाय उस्ताद रखा करते थे। हमारे सामंत महाशय के ससुराल में कोई समारोह आयोजित किया

जा रहा था तो उन्होंने सोचा अपने चाय उस्ताद को भी साथ लिए चलता हूँ। ससुराल में थोड़ी शान ही बढ़ेगी। धीमी लंबी यात्रा करके महाशय और चाय उस्ताद अपने गंतव्य पर पहुंचते हैं, जहां उनकी खूब खातिरदारी होती है। उस्ताद की चाय कला देखकर सभी बहुत प्रसन्न और प्रभावित हुए और उस्ताद की तारीफों के पुल बांधे जाने लगे। उड़ते-उड़ते यह बात शहर में एक नए समुराय योद्धा तक पहुंची जो थोड़ा सा ईर्ष्यालू प्रवृत्ति का था। उस्ताद जी नए शहर को देखने निकल पड़े और एक दिन शाम को दुर्भाग्यवश चाय उस्ताद उस ईर्ष्यालू समुराय के सामने पड़ गया जो अपने अलावा किसी और की ख्याति बर्दाश्त नहीं कर सकता था। बिना समय गँवाए समुराय ने चाय उस्ताद को युद्ध की चुनौती दे दी। चाय उस्ताद को कुछ समझ में नहीं



आया कि मैंने ऐसा क्या किया है और मेरा जीवन इस मोड़ पर कैसे आ गया? उसके पैरों तले ज़मीन खिसक गई। योद्धा का शरीर देखकर उस्ताद को प्रत्यक्ष यमराज का दर्शन प्राप्त हो रहा था। अंतिम समय करीब था फिर भी उस्ताद के अपने आप पर काबू पाते हुए सोचा कि यदि मैं चुनौती स्वीकार नहीं करता हूँ तो मेरे साथ-साथ मालिक की भी बहुत बेइज्जती हो जाएगी और अगर स्वीकार करता हूँ तो मृत्यु निश्चित है। पता नहीं क्या सोच कर उस्ताद ने योद्धा से कहा-“मैं तुम्हारी चुनौती स्वीकार करता हूँ, मगर एक शर्त पर कि युद्ध आज नहीं बल्कि कल शाम को होगा।” योद्धा ने शर्त स्वीकार कर ली और सोचा कौन सा यह एक दिन में समुराय योद्धा बन के वापस आ जाएगा। वह मन ही मन उस्ताद पर हंस रहा था।

भागता-भागता उस्ताद सामंत के पास आकर सारी बात बताने लगा और सामंत उसे लेकर एक पुराने समुराय गुरू

के पास गया। उसका मानना था कि यदि कल मृत्यु निश्चित ही है तो कम से कम सम्मान के साथ युद्ध करके मृत्यु को गले लगाएंगे, इस आत्म समर्पण वाले भाव के साथ मरना अच्छा नहीं। समुराय गुरू ने उस्ताद की मनःस्थिति बदलने के लिए उसे कहा चलो मेरे लिए चाय पेश करो जैसे तुम अपने मालिक के लिए करते हो। इससे मालिक और उस्ताद दोनों चकरा गए। यहां जीवन मृत्यु का सवाल है और गुरू जी को चाय पीने की पड़ी है। फिर मरता क्या ना करता उस्ताद ने सब कुछ भुला के एक अंतिम बार वह किया जो उसके लिए स्वाभाविक था। एकदम शांत मन और हाव-भाव के साथ वो चाय परोसने लगा। इससे गुरू अचानक से खड़े हुए और चिल्लाकर बोले-“बस-बस अब तुम नहीं मरोगे।” बस कल शाम बिल्कुल इसी हाव-भाव के साथ समुराय के सामने पेश आना बाकी सारी बातें भूल जाओ। आराम से नींद लो। अगले दिन उस्ताद इसी अंदाज के साथ युद्ध के लिए पहुंच गया। अति आत्मविश्वास से भरे समुराय को कुछ गड़बड़ लगी। यह चाय वाला तो बहुत शांत गंभीर दिख रहा है। न कोई डर, न चेहरे पर शिकन, कहीं मैंने कोई गलती तो नहीं कर दी। ऐसा तो नहीं यह चाय वाला युद्ध में उतना ही कुशल है, जितना चाय बनाने में। सस्ते से मारा न जाऊँ। अचानक समुराय योद्धा ने “चाय उस्ताद” को झुक के उसी के जापानी लहज़े में सलाम किया और अपने दुस्साहस के लिए माफ़ी मांगी और साथ ही चाय की कला सिखाने का आग्रह किया।

गुरू जी सही निकले। गुरूजी एक सार्वभौमिक सत्य जानते थे कि हमारा डर हमें उतना ही डराता है जितना हम उससे डरते हैं। जीवन की कठिनाइयां हम पर उतनी ही हावी होती है, जितना हम होने देते हैं। यदि हम खुद के रास्ते में बाधा (डर, निराशा, आलस, इत्यादि) न बने और मुश्किलों का डट कर सामना करें तो अक्सर पाएंगे कि बहुत सी कठिनाइयां वास्तव में इतनी कठिन नहीं थीं, जितनी बाहर से प्रतीत होती थीं।

“काल करे सो आज कर, आज करे सो अब”

रूस में बहुत से प्रसिद्ध साहित्यकार हुए, जिनमें से सबसे बड़ा नाम फ्योदोर दोस्तोवेस्की हैं और वे मुझे विशेष रूप से पसंद हैं। उनके साहित्यिक जीवन की शुरुआत से पहले का जीवन बिल्कुल विपरीत था। जो आलस, आराम, मौज-मस्ती से भरा हुआ था। साथ ही साथ वे अधिक संवेदनशील होने के कारण अक्सर अवसाद से ग्रस्त रहते थे। उन्हें हमेशा यह मलाल रहता था कि जीवन में भी कुछ विशेष हासिल नहीं कर पा रहे हैं। उनका जीवन यूँ ही व्यर्थ निकल जाएगा। वे कोई पहचान नहीं बना पाएंगे और उनके मरने के बाद उन्हें कोई याद नहीं

करेगा। उस समय रूस में ज़ार (Tzar) का शासन था जो अपने विरोधियों और विरोधियों के समर्थकों की निगरानी करवाता रहता था जिनमें कुछ लेखक भी शामिल थे। प्रायः लेखक ज़ार के विरुद्ध ही रहते थे। वैसे भी बुद्धिजीवी होना अक्सर सत्ता के खिलाफ होने का एक पर्यायवाची ही समझा जाता है। एक दिन वह हो ही गया जिसका डर था। फ्योदोर अपने पांच लेखक साथियों के साथ पकड़े जाते हैं और उन्हें 10 वर्षों का कारावास दिया जाता है, वह भी साइबेरिया के बर्फीले बंजरों में। ज़ार ने पहले से ही निश्चित किया था कि इन सब को 10-10 वर्षों का कारावास दिया जाएगा। मगर उन्हें शर्मिंदा करने और दूसरों को चेतावनी देने के इरादे से एक रोचक और रोंगटे खड़े करने वाला नाटक रचा गया। सभी पांच अपराधियों को एक पंक्ति में खड़ा कर दिया गया। राजा का एक अधिकारी हाथ में सफेद कागज लेकर उसे पढ़ने की मुद्रा में खड़ा था। तय था उस कागज में पाँचों के फांसी का आदेश ही था। सभी अपराधियों के सामने एक-एक ताबूत रखा गया था जिसे उस दौरान तुरंत पेंट किया गया था। थोड़ी ही दूर पर पादरी साहब भी खड़े थे जो अपराधियों के अंतिम पश्चातापों को भगवान ईसा मसीह के पास पहुंचाने के लिए नियुक्त किए गए थे। सबकी मौत उस दिन स्पष्ट प्रतीत हो रही थी। फ्योदोर इन सारी गतिविधियों के दौरान ऊपर गिरजाघर पर लगे स्टील के मीनार से टकराती हुई सूरज की किरणों को देख रहे थे और सोच रहे थे कि बस कुछ ही क्षणों में जैसे सूरज मीनार के पीछे छिप जाएगा वैसे ही मेरा यह जीवन भी व्यर्थ चला जाएगा और मैं इस मानव जीवन को बिना सिद्ध किए ही दुनिया को छोड़कर चला जाऊंगा। उसके मन में द्वेष था कि मैंने जिंदगी को कितनी गैर जिम्मेदारी वाले रवैये से जिया। अगर आज ईश्वर मुझे जीवन दान दे दें या अगर मैं बच जाऊं तो अपने जीवन का एक क्षण भी व्यर्थ न जाने दूंगा। जब मैं अपने उन दिनों को याद करता हूँ जिन्हें मैंने व्यर्थ मस्ती, मजाक,

भलाई, बुराई और आलस में बिता दिया तो मेरा हृदय विचलित हो उठता है। वह रोते हुए सोचते हैं कि काश ! इंसान समय के महत्व को जान पाता; जीवन के हर क्षण को अनंत सुख के क्षण के रूप में समझ पाता। मगर हे भगवान ! यह बात सभी नहीं जान पाते या देर से जानते हैं। ऐसे ही अपने विचारों में खोए हुए फ्योदोर की तुंद्रा तब टूटी जब दूर से एक अधिकारी सफेद घोड़े पर सवार होकर तेजी से इन सबके पास आया। उसने अपने हाथ में ज़ार का नया फरमान लेकर पढ़ा। सभी पांच अपराधियों की फांसी माफ कर दी गई है और उसकी जगह पर सबको 10-10 साल का कठोर कारावास दिया गया। फ्योदोर खुशी से रोने लगा। उसे ईश्वर ने जीवनदान दे दिया। फिर एक घोड़ा गाड़ी में सभी को साइबेरिया पहुंचा दिया गया। जेल से वापस आने के बाद फ्योदोर पागलों की तरह काम करने लगा। चलते-चलते भी वह अपने अगले उपन्यास की पंक्तियों में खोया रहता था। अब उसका एक ही मकसद था, जीवन का एक क्षण भी बर्बाद न करना और हमेशा काम में लगे रहना। उन्होंने खुद को सेंट पीटर्सबर्ग में एक बड़े साहित्यकार के रूप में स्थापित कर लिया। आज भी उन्हें इतिहास के महानतम उपन्यासकारों में से एक माना जाता है। उनकी सभी रचनाएं मानव मन की जटिल गहराइयों का परिचय देती हैं।

अतः उक्त घटनाओं के माध्यम से हमने देखा एवं समझा कि मानव जीवन कितना अनमोल है और हमारे लिए हर एक क्षण कितना महत्वपूर्ण है जिसका सदुपयोग कर चमत्कार भी किए जा सकते हैं और व्यर्थ बिताकर भाग्य को दफन भी किया जा सकता है। यह हमारे विवेक पर निर्भर है कि हम ज्ञान-कुंभ में डुबकी लगाकर अर्थात् अनुभव प्राप्त कर जीवन के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करें अथवा उसे व्यर्थ में बिताकर निष्फल बना दें।



“इस विशाल प्रदेश के हर भाग में शिक्षित-अशिक्षित, नागरिक और ग्रामीण सभी हिंदी को समझते हैं।”

- राहुल सांकृत्यायन।



रंजीत सिंह

कनिष्ठ अनुवादक

विवाह का नया रूप

भारतीय मनुष्य के जीवन में विवाह एक महत्वपूर्ण संस्कार है जो दो अनजान व्यक्तियों के साथ-साथ दो परिवारों को जोड़ता है। एक ऐसा समय था जब भारत में विवाह से जुड़ी विभिन्न प्रकार की कुरीतियां थी हालांकि उनमें से कई आज भी समाज में मौजूद हैं। बदलते समय के साथ विश्व और खासकर भारत में आधुनिकता के तले कई व्यापक परिवर्तन हुए, इस परिवर्तन का प्रभाव विवाह संस्कार पर भी पड़ा। जीवन की रेल को आगे बढ़ाने के लिए विवाह की जो महत्ता थी, वह विकृत विचारों को ऊहापोह में धीरे-धीरे बहुत सस्ती-सी हो गई। विवाह के मंगल बंधन से पूरे परिवार को जोड़ने की परिकल्पना से अलग एकल परिवार की परिकल्पना ने ले लिया। जगह-जगह वृद्धाश्रम खुलने लगे, लोगों के मन में विवाह संस्था के प्रति जो आस्था थी, वो प्रायः खत्म हो गयी। पाश्चात्य संस्कृति की व्यापक आधुनिक सोच ने आज प्रत्येक व्यक्ति को सोचनीय एवं तार्किक जरूर बना रहा है, परन्तु एकल परिवार की परिकल्पना एवं पाश्चात्य प्रभाव में संस्कारों के प्रति अनास्था से परिवार में विश्वास टूट रहा है।

श्यामा राधेश्याम जोशी जी की चौथी पुत्री थी। वह अपनी पुत्रियों को अच्छे व्यक्तियों के हाथों सौंपना चाहते थे। रेलवे की सरकारी नौकरी होने के कारण उन्हें अपनी बेटियों के विवाह में कुछ खास परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ा। उन्होंने अपनी तीनों बेटियों का विवाह बड़े धूम-धाम से करवाया था। अब बारी श्यामा की थी। श्यामा अपने रूप के कारण किसी भी व्यक्ति को पसंद आ जाती। उस समय लोगों को अपनी बेटी को शहर में व्याहने का बहुत शौक था और हो भी क्यों न, शहर में गांव के मुकाबले वो सारी सुख-सुविधाएं मौजूद थी जो ग्राम के लोगों का सपना होता था। एक गुणवती लड़की श्यामा के लिए राधेश्याम जी अच्छा लड़का देखते-देखते कलकत्ता शहर जा पहुंचे। लड़का न तो सरकारी नौकरी करता था और न ही रूप रंग में सुंदर ही था। किन्तु शहर में अपना व्यापार होने के कारण पूरे गांव में उनका बहुत नाम था। राधेश्याम जी शादी के लिए मान गए। श्यामा बहुत भोली थी उसे अच्छे बुरे का भी सार्थक ज्ञान नहीं था। पिता की अंतिम पुत्री होने के कारण बड़े धूमधाम

से विवाह समारोह का आयोजन किया गया। ससुराल जाने के बाद श्यामा को बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। गाँव की सीधी-सादी युवती होने के कारण शहर के दाँव-पेच उसकी समझ के परे थे। धीरे-धीरे श्यामा को पता चला कि उसका पति बहुत शराब पीता है। विवाह के कुछ समय तक तो सब कुछ ठीक था, किंतु धीरे-धीरे स्थिति बिगड़ने लगी। श्यामा का पति रोज पीकर आता और उसे खूब मारता, वह बेचारी चुपचाप सब कुछ सहती रहती। श्यामा अपने माता-पिता से भी कोई आस नहीं रखती थी क्योंकि पिता के सेवानिवृत्त होने के बाद से उनकी हालत अच्छी नहीं थी। अपने ससुराल में श्यामा चौथी बहू थी। एक संयुक्त परिवार में होने के नाते संसाधन के अभाव में श्यामा को सुबह से शाम तक कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी। इतनी मेहनत के बाद जब रात को खाने का समय होता, तब उसे पति की मार खाकर सोना पड़ता। कुछ वर्षों में ही श्यामा को दो पुत्रों की प्राप्ति हुई। श्यामा खुश तो थी लेकिन पति की स्थिति उसे हमेशा चिंता में रखती। दोनों पुत्रों में केवल एक वर्ष का ही अंतराल था। दो वर्षों के अंतराल में श्यामा ने दो पुत्रियों को भी जन्म दिया जिसने श्यामा को बहुत कमजोर बना दिया। ऐसा लगने लगा कि श्यामा एक मशीन है जो सुबह से शाम तक संयुक्त परिवार की जरूरतों को पूरा करती और रात में पति का अत्याचार सहती। इस पूरे परिवार में श्यामा के साथ केवल उसकी सास थी, जिसके प्रेम के आगे वह कोई फैसला नहीं ले पाती थी।

श्यामा का जीवन इसी तरह चलता रहा। बच्चें बड़े होने लगे। संयुक्त परिवार में चार बच्चों की जिम्मेदारी संभालना बहुत मुश्किल था किंतु ईश्वर को यह भी राश नहीं आया। धीरे-धीरे श्यामा की पति की स्थिति बिगड़ने लगी। वह बार-बार अस्पताल जाता किंतु ठीक होने के बाद फिर शराब पीना चालू कर देता। श्यामा बहुत कष्टों से गुजर रही थी। अचानक एक दिन पति की स्थिति बहुत बिगड़ गयी। उन्हें अस्पताल ले जाया गया लेकिन रास्ते में ही उनकी मृत्यु हो गयी। श्यामा कम उम्र की एक विधवा बन गयी। उसके जीवन में पांच बच्चों की जिम्मेदारियों का बोझ मानों पहाड़ बन गया। सभी बच्चे शुरू से अपनी माता का कष्ट बहुत करीब से देखते थे, सबको विश्वास था एक न एक दिन

श्यामा बच्चों से सुख जरूर पायेगी। पिता के अभाव में बच्चें धीरे-धीरे बिगड़ते गए। लड़कियों को श्यामा स्वावलंबी बनाना चाहती थी किंतु उसके जीवन का दुःख मानो खत्म ही नहीं होता था। बेटिया आधुनिक पाश्चात्य संस्कृति के वातावरण में माँ के जीवन का सारा दुःख-कष्ट मानो भूल गयी हो। एक अकेली माँ के लिए चार बच्चों को पालना मुश्किल-सा होने लगा। श्यामा की सास जो राजेश की मृत्यु के बाद उसका एक मात्र सहारा थी वह भी धीरे-धीरे बीमार पड़ने लगी। एक दिन ऐसा आया कि उनका भी देहांत हो गया। संयुक्त परिवार की परिपाटी देखिए जैसे ही उसकी सास का स्वर्गवास हुआ उसके परिवार वालों ने उसे अलग कर दिया। यह

सारे कष्ट मानो श्यामा को जीते जी नरक का अनुभव दे रहे थे। वह अपने बच्चों को बहुत समझाती किंतु कोई उसकी बात को समझने को तैयार ही नहीं था। श्यामा की छोटी बेटी राधिका पढ़ने में बहुत मेधावी एवं बुद्धिमान थी। श्यामा उसे बहुत पढ़ाना चाहती थी लेकिन कहते हैं न परिवेश का प्रभाव



लोगों पर दवा की तरह असर करता है। ऐसा दौर आ गया था कि लड़के-लड़किया बिना माता-पिता के समर्थन और उनके सहमति के भागकर विवाह कर रहे थे। श्यामा को विश्वास था कि उसने अपने जीवन में जितना संघर्ष झेला है, उसे देखकर उनके बच्चे कभी ऐसा नहीं करेंगे। श्यामा विवाह का मतलब जान चुकी थी क्योंकि जिस स्थिति में उसका विवाह किया गया था उसका दुःख वह आज भी झेल रहीं थी। हर दिन कहीं न कहीं से खबर मिल जाती कि किसी लड़के के साथ फलाना की लड़की ने भाग कर विवाह कर लिया। राधिका का ध्यान भी धीरे-धीरे पढ़ाई से इतर होने लगा। राधिका छोटी थी उसे दुनिया के दांव-पेच के बारे में पता नहीं था। श्यामा ने देखा था कि किस प्रकार किसी की बेटी के जाने के बाद उसका सारा दोष उसकी माँ पर डाल दिया जाता है। श्यामा को अपनी बेटियों पर भरोसा था। श्यामा के दोनों बेटे कड़ी मेहनत करते थे। दिन में बच्चों को पढ़ाते और बाद में वह खुद पढ़ते थे। सारा इलाका इनके जज्बे की मिशाल देता था किंतु समय को यह सब मंजूर नहीं

था। एक दिन रात के 12 बजे जब राधिका घर नहीं आई तब श्यामा की घबराहट बढ़ने लगी। राधिका ने कहा था कि- 'माँ मैं अपने सहेली के जन्मदिन में जा रही हूँ, शाम तक वापस आ जाऊंगी'। श्यामा से रहा नहीं गया तो उसने अपने बेटों को सारी बात बताई। कई जगह फोन लगाने के बाद पता चला कि आज उसकी किसी भी मित्र का जन्मदिन नहीं था। श्यामा का मन डरा हुआ था, उतना बड़ा संयुक्त परिवार श्यामा पर आरोप लगाने के लिए मुँह खोले बैठा था। सारे परिवार में बात फैल गई। अंत में पता चला कि राधिका ने अपने कॉलेज के किसी मित्र के साथ

बहुत दिनों पहले ही कागजी विवाह कर ली थी और आज उन लोगों ने सामाजिक विवाह भी कर लिया। यह सुनते ही मानो श्यामा की इतने दिनों का संघर्ष उसकी नजरों के सामने घूमने लगा, उसके चारों तरफ अंधेरा छा गया। यह विश्वास करना बहुत कठिन हो गया कि उसकी बेटी राधिका ने ऐसा किया है। बचपन में पिता की असमय मृत्यु के बाद से श्यामा ने स्वयं इतने कष्ट

सहकर अपने बच्चों को बड़ा किया था। सारे घर वाले श्यामा को दोष देने लगे। श्यामा के दोनों बेटों ने परिवार के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया। राधिका के असमय विवाह ने उसके जीवन को पुनः श्यामा जैसा बना दिया। श्यामा अपनी बेटी को एक स्वावलंबी जीवन देना चाहती थी, परन्तु आज इस असमय विवाह ने दोनों को जीवन बर्बाद कर दिया।

माता-पिता अपने बच्चों को बहुत-परिश्रम और कष्ट से बड़ा करते हैं और अपने सामर्थ्य के अनुसार उनकी सारी जरूरतों को भी पूरा करते हैं किंतु विवाह रूपी संस्था को इस विकृत और अविश्वसनीय रूप ने आज प्रत्येक व्यक्ति के मन में एक प्रश्नचिह्न लगा दिया है कि क्या है विवाह का वास्तविक अर्थ और उसकी महत्ता? माता-पिता हमेशा अपने बच्चों लिए कुछ अच्छा करना चाहते हैं किंतु आज का युवा वर्ग अपने माता-पिता से अधिक सोशल मीडिया पर अपने विचार व्यक्त करने में ज्यादा सहज महसूस करते हैं।





गौरव यादव

सहायक लेखा अधिकारी

पहाड़ पर देखा

एक दिन मैं अपने व्हाट्सऐप पर लोगों के स्टेटस देख रहा था, अचानक मेरा ध्यान मेरे एक सहकर्मी के स्टेटस पर पड़ा उनके स्टेटस का बैकग्राउंड मुझे काफी मनोरम लगा, मैंने तुरंत व्हाट्सऐप पर उनसे पूछा कि ये कौन सी जगह है? क्या ये जगह भुवनेश्वर में है? चूँकि कल तक तो इस सहकर्मी को मैंने अपने कार्यालय में देखा था तो मुझे लगा कि शायद ये जगह भुवनेश्वर के ही आस पास होगी। कुछ समय बाद उनका जवाब आया... हाँ ये जगह भुवनेश्वर में है, ये बरुनई हिल है, न्यू ए.जी. कॉलोनी से कुछ 20-25 किलोमीटर दूर। फिर क्या था... मेरे आगामी घूमने की जगहों की सूची में ये नाम भी दर्ज हो गया। बरुनई हिल खोर्दा जिले में स्थित एक छोटी सी पहाड़ी है। एक रविवार को मैं अपने एक सहकर्मी के साथ मोटरसाइकिल से बरुनई की पहाड़ी की ओर निकल पड़ा। पहाड़ी पर ऊपर जाने के लिए कुछ दूर तक के लिए एक सुगम ढलुआ रास्ता बना हुआ था, ये रास्ता कुछ 6-7 फिट चौड़ा था, रास्ते की जमीन पर पत्थर बिछा हुआ था और अगल- बगल बैरिकेडिंग भी थी जो लोगो को चढ़ने उतरने में सहारा और सुरक्षा देने के लिए थी। जैसे-जैसे हम लोग ऊपर जाते गए मुझे अगल-बगल कम लोग दिखने लगे यँ कहे अकेलापन बढ़ने लगा, इसी समय मुझे अंग्रेजी का मुहावरा - "शीर्ष पर अकेलापन होता है" (There is loneliness at top.) का ख्याल आया। चलते-चलते हर रास्ते की तरह इस बैरिकेडिंग युक्त सुरक्षित, पर्यटक अनुकूल, रास्ते का भी अंत हो गया। बरुनई की पहाड़ी ज्यादा ऊँची नहीं है, अभी तक हम जहाँ पहुँचे थे वहाँ तक आने में कोई विशेष खतरा भी नहीं था, एक बना-बनाया ठीक-ठाक रास्ता था पर फिर भी कई लोग इतने ऊपर भी नहीं चढ़े। शायद कुछ की उर्जा, तो कुछ का धैर्य बीच में ही खत्म हो गया, कुछ का शुरू से ही ज्यादा ऊपर जाने का लक्ष्य नहीं था। वहीं कुछ लोगों के पास ऊर्जा, धैर्य व इरादा और ज्यादा ऊपर चढ़ने का था, पर वो जिन लोगों के साथ आये थे उनके हिम्मत ने जवाब दे दिया था जिसके कारण उन सबल लोगों को भी बीच रास्ते से ही लौट जाना पड़ा हालांकि उनलोगों के पहाड़ की चढ़ाई अधूरी छोड़ने के और भी कारण हो सकते हैं। खैर! जो भी हो, असली रोमांच तो इस निश्चित, सुगम, पर्यटन

अनुकूल मार्ग के आगे शुरू हुआ, जिसके ऊपर रास्ता जंगली है और जमीन उबड़-खाबड़। अब व्यवस्थित पत्थरों के मार्ग की जगह भुरभुरे मिट्टी, कंकड़ और पत्थरों की फिसलनदार जमीन है। जहाँ 6-7 फीट ऊँची झाड़ियों के बीच में आधे-एक फीट का सँकरा सा रास्ता पहाड़ी में और ऊपर की ओर जाता है, जहाँ कई जगह तो आगे जाने का रास्ता ही स्पष्ट नहीं।

हमलोगों का आगे का सफ़र अब ऐसे रास्तों से ही होना था। इस रास्ते में कुछ दूर अन्दर जाने पर सहसा मुझे दो तरह के भय का विचार आया। पहला जंगली जीव जैसे सियार, लोमड़ी, सांप, तेंदुआ इत्यादि कहीं अगल बगल की ओर से निकल ना आएँ और दूसरा भय गुंडे-मवालियों एवं अपराधियों का कि कहीं अचानक से इस सन्नाटेदार झाड़ियों में से वो न टपक जाए और फिर बन्दूक या चाकू के दम पर हमारे साथ लूट- पाट या कुछ और गलत न हो जाए। परन्तु माउंटेन ड्यू के विज्ञापनों में दिए गए संदेश कि डर के आगे जीत है ने हमारा साहस बनाए रखा और हमलोग आगे बढ़ते गए। मुझे समझ आया कि कई बार और आगे बढ़ने के लिए हमें भय को दबाना पड़ता है। खैर, चलते-चलते अब हमलोग उस छोटी पहाड़ी के शिखर तक आ गए। अब और ऊपर जाने को कुछ बचा ही नहीं था तो फिर हमें वहाँ रुकना और बैठना पड़ा। पहाड़ी की ऊँचाई से अब हम नीचे फैला हुआ शहर देख रहे थे। मेरे साथी सहकर्मी ने कहा कि देखो वो फैक्ट्री और मैदान कितने छोटे- छोटे दिख रहे हैं। वो सारी ऊँची-ऊँची इमारतें जो हमें सड़को से गगनचुम्बी दिखाई देती है, पहाड़ की ऊँचाई से हम उनका बौनापन देख पा रहे थे। शायद ज्ञान की तलाश में हिमालय के पहाड़ों पर जाने की परम्परा की एक वजह ये भी होती होगी कि ये पहाड़ की ऊँचाईयां हमें मौका देती है नीचे चल रही चीजों के बौनेपन को देखने का। पहाड़ की ऊँचाई से जब हम एक बड़े भू-भाग को एक साथ देख रहे थे तो उस भू-भाग में स्थित ऊँची से ऊँची इमारतों का भी सतहीकरण हो गया था।

पहाड़ ने मुझे नीचे बसे शहर को एक अलग दृष्टि से देखने का मौका दिया एक असीम चुप्पी के साथ शहर को देखने का मौका। ऐसा लगा मानों जब हम पहाड़ के नीचे शहर में

जीते हैं तब हमें पूरा शहर नहीं दिखता, हमें अगल-बगल की इमारतें दिखती हैं, चाय वाले भैया दिखते हैं, कार और बाइक्स, हॉर्न की आवाजे, मन के किसी कोने में चार लोगों ने क्या कहा था उनकी बातें सुनाई देती हैं। दिखता है - काम- धंधा, लड़ाई-झगडा, ये बात- वो बात। परन्तु पहाड़ के ऊपर से शहर काफी अलग दिख रहा था, पहाड़ के ऊपर से शहर को एक विरक्त भाव से देख पाया। ऊपर से बस शहर दिखा, कोई शोर-शराबा नहीं, किसी हॉर्न की आवाज नहीं। पहाड़ पर फिर मेरे कल्पना

में आया कि अगर 400-500 फीट की इस छोटी सी ऊंचाई से शहर की कोई आवाज सुनाई नहीं दे रही, तब तो अंतरिक्ष से मुझे ये शहर भी नहीं दिखेगा, शायद उस ऊंचाई पर हमें पृथ्वी का एक बड़ा भू-भाग दिखेगा जिसमें हम देशों को भी मुश्किल से पहचान पाएंगे। भारत के त्रिभुजाकार हिस्से की वजह से शायद मैं उसे पहचान भी जाऊँ, पर अन्य किसी देश को पहचान पाऊंगा, ऐसा प्रतीत नहीं होता है। फिर

मैंने सोचा कि अगर मैं और दूर से इसे देखूँ, मान लूँ कि मैं मंगल ग्रह पर चला गया हूँ तब तो मुझे ये पृथ्वी भी बहुत मुश्किल से दिखेगी, जैसे पृथ्वी से मंगल ग्रह छोटा सा चमकता तारा दिखता है। फिर तो अनंत आकाश-गंगाओं की दूरी से देखो तो फिर यही निष्कर्ष निकलता है कि हम, हमारा शहर, हमारी पृथ्वी इस बड़े ब्रह्माण्ड में एक धूल के कण भर हैं। एक बार तो लगा मानव जाति भी कितनी मूर्ख है कि धूलभर के शहरों और क्षेत्रों पर वर्चस्व करने की लड़ाई लड़ रहा है। ये रूप, लिंग, नस्ल, क्षेत्र जैसी तुच्छ अस्मिता आखिर कैसे आकाश गंगाओं तक सोच सकने वाले मानव के दिलो-दिमाग पर हावी हो गए है! न जाने किस अबोध बालक ने धूलभर के महाद्वीप पर शासन करने वाले सिकंदर के महान होने का प्रचार कर दिया है। फिर मुझे एहसास हुआ कि

थोड़ी ऊँचाई से देखने पर सिर्फ ये शहर ही अलग नहीं दिखता है। अगर हम अपने अंतर्मन को भी थोड़ी ऊँचाई से, थोड़ी दूर से देखे तो फिर हम अपने मन के द्वन्द, झंझावत, और दुःख का भी सतहीकरण होते देख सकते हैं। पर हम अक्सर मन को थोड़ी ऊंचाई से, थोड़ी दूरी से देखने में परहेज करते हैं। शायद हम ऊपर जाकर देखने में लगने वाले श्रम को नहीं करना चाहते या पहचान के संकट (Identity Crisis) आने के भय से भयभीत हो जाते हैं। ये सब मैं सोच ही रहा था; कि मेरा ध्यान इस बात पर



गया कि अब शाम हो गयी है और नीचे उतरना चाहिए अन्यथा अँधेरा हो जाएगा तथा उतरने में दिक्कत होंगी। इस शारीरिक जीवन को बचाने का विचार जैसे ही आया, मुझे पहाड़ से उतरना पड़ा। पहाड़ से नीचे उतरते ही पहाड़ का दृष्टिकोण भी पीछे छूटने लगा। शहर के वाहनों का शोर-शराबा फिर से सुनाई देने लगा। स्वीट कॉर्न वाले भैया भी दिख गए और भूख का भी एहसास हो गया। हल्का-फुल्का खाकर हम लोग वापस न्यू एजी कॉलोनी लौट गए। मुझे समझ आ गया कि कई जरूरी चीजों के लिए पहाड़ हमें नया दृष्टिकोण देता है, जैसे खाना इत्यादि के लिए हमें पहाड़ के नीचे शहर में आना पड़ता है, और डरा हुआ आदमी पहाड़ पर ज़्यादा देर नहीं रह पाता है और वो दिन के उजाले में ही पहाड़ से नीचे उतर जाता है।





रविंद्र कुमार दास

सहायक लेखा अधिकारी

एक वायु सैनिक की जीवन गाथा

मेरे जीवन की शुरूआत ग्रामीण परिवेश से हुई है। गांव में प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बाद घर में गरीबी के कारण मैं बड़े कॉलेज में शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाया। परन्तु एक छोटे से शहर से होने के बावजूद मैंने बारहवीं कक्षा की पढ़ाई विज्ञान विषय के साथ पूरी की। मैंने विज्ञान विषय से स्नातक की पढ़ाई पाराद्वीप बंदरगाह के तट पर स्थित कॉलेज से पूरी की। साथ ही मैंने अपनी शिक्षा के खर्च को स्वयं वहन करने के लिए ट्यूशन कक्षाएं लेनी शुरू कर दी। कड़ी मेहनत करके मैंने अपने ग्रेजुएशन 'विशेष योग्यता (डिस्टिंक्शन)' के साथ पास किया। वह दिन मुझे आज भी याद है जब पहली बार स्नातक की परीक्षा डिस्टिंक्शन से उत्तीर्ण करने की खुशी में मेरे चाचा ने मुझे 'एक्शन कंपनी' का एक जोड़ी जूते खरीद कर दिए और मुझे पहली बार जूता पहनने का मौका मिला। ग्रेजुएशन के दौरान ही मैंने नौकरी के लिए तैयारी शुरू कर दी थी जिसके परिणामस्वरूप मुझे 'भारतीय रेलवे' और 'भारतीय वायु सेवा' से कॉल लेटर आ गया। मैंने भारतीय वायुसेना में कार्यग्रहण कर अपने देश की सेवा करने का निर्णय लिया।

हाथ में वायु सेना का कॉल लेटर और रेल की कंफर्म टिकट लेकर मैं एक नए सफर पर निकल पड़ा। मैं भुवनेश्वर से कर्नाटक के एक ट्रेनिंग सेंटर में पहुंच गया। वहां पहुंचने के बाद पता चला कि मेरे साथ और डेढ़ सौ प्रशिक्षु देश के कोने-कोने से आए हुए थे। पहले दिन हमें आराम करने का मौका मिला और उसी दिन हमें वर्दी, जूते, टोपी, बेल्ट आदि सारा सामान मिल गया। अब बारी आई दोपहर के खाने की, मैं मेस में लाइन लगाकर अंदर गया। वहां पहुंच कर देखा कि विविध प्रकार के व्यंजन (खाना) भरपूर मात्रा में थे और कोई कमी नहीं थी। खाने के बाद एक फल मिला। वहां पर लिखा हुआ था कि "More you sweat in Peace- less you bleed in war." और दीवार पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा हुआ था-"It is much as you want but do not waste food."। उस दिन खाने के बाद एक इंस्ट्रक्टर ने हमें अनुशासन के बारे में समझाया। रात के भोजन के बाद उस दिन अच्छी नींद आई। अगले दिन सुबह उठा तो देखा लंबी लाइन लगी हुई थी। मेरे पूछने पर मालूम हुआ कि

यह नित्यकर्म एवं नहाने की लाइन थी। वहां पर जानबूझकर ओवरलोड टैंक नहीं बनाया गया था। एक निर्धारित समय पर पानी आता था और उसी समय के अंदर अपने सुबह के सारे काम खत्म करके एक बाल्टी पानी आपात स्थिति के लिए रखना पड़ता था। मैं जैसे-तैसे करके तैयार होकर ग्राउंड में पहुंच गया। वहां पर सारे प्रशिक्षुओं को छोटे-छोटे ग्रुप में बांटा गया था और नाम दिया फ्लाइट ए.बी.सी आदि। जब हमें कोई काम सौंपे जाते तो इन्हीं फ्लाइटवार नामों से दिए जाते। विभाजित फ्लाइट के अनुसार ही हम सुबह का नाश्ता करते थे। उस दिन करीब 10:00 बजे एक जी.टी.आई ग्राउंड ट्रेनिंग इंस्ट्रक्टर आया। वे हमें कैपस के भीतर एक सैलून में ले गए। वहां बहुत सारे नाई हेयर कट कर रहे थे। हेयर-कट ऐसा किया जाता मानो सिर पर कोई एक कटोरी रख दी गई हो अर्थात् सिर्फ ऊपर में ही एक-एक इंच के बाल छोड़कर बाकी सब काट दिए जाते। वहां पर आईना नहीं लगाया गया था। आईना न होने के कारण कोई भी अपना चेहरा देख नहीं सकता था। सब एक दूसरे को देखकर हंस के लोटपोट हो गए। जो बाल के शौकीन थे, उनका तो बुरा हाल हो गया था। उस दिन दोपहर को एक जी.टी.आई सबको फ्लाइट वाइस फॉल इन (ग्रुप में तीन लाइन में खड़े होना) कराके पुनः देश के लिए हमारा कर्तव्य, अनुशासन और अन्य महत्वपूर्ण बातें जैसे वर्दी और जूते कैसे पहनना है बताया। अगले दिन से हमारी फिजिकल ट्रेनिंग और पढ़ाई शुरू हो गई। हमारा प्रतिदिन का पहले से निर्धारित था - हेल्थ रन (सुबह 4:00 से 5:00 बजे), स्नान, नाश्ता करना और वर्दी पहनकर तैयार होना (5:00 से 6:00 बजे), परेड करना (6:00 से 7:00 बजे), टी ब्रेक (7:00 से 7.30 बजे), पढ़ाई करना (सुबह 7:30 से दोपहर 1:30 बजे), लंच ब्रेक (दोपहर 1:30 से 2:30), व्यायाम (दोपहर 3.30 से शाम 5.30 बजे) और उसके बाद रात का भोजन एवं विश्राम। प्रत्येक दिन रात को 10.00 बजे फॉल इन होता था यह सुनिश्चित करने के लिए की कहीं कोई भाग तो नहीं गया।

पहले दिन हाथ-पैर में थोड़ा-थोड़ा दर्द हुआ। अगले दिन शरीर के हर अंग-प्रत्यंग में ऐसा दर्द हो रहा था जैसे कि एक्सीडेंट हो गया हो। थकावट इतनी कि अगर किसी के चेहरे पर मच्छर बैठा हो तो वह खुद नहीं मार सकता था। फिर धीरे-धीरे शरीर

परिस्थिति के अनुकूल कर दिया गया। एक महीने के भीतर सबकी जमी हुई चर्बी भी निकल गई और सारे दुबले-पतले हो गए। 6 महीने की इस बेसिक ट्रेनिंग के खत्म होने तक सब स्मार्ट दिखने लगे थे। बेसिक ट्रेनिंग के बाद हम चेन्नई में डिप्लोमा कोर्स के लिए पहुंचे। वहां पर परेड और व्यायाम से ज्यादा पढ़ाई पर ध्यान दिया जाता था। यह कोर्स करीब डेढ़ साल तक चला। कोर्स के दौरान प्रशिक्षुओं को उनके टैलेंट के अनुसार तीन वर्गों में बांट दिया गया था - पहला फाइटर स्ट्रिम, दूसरा ट्रांसपोर्ट स्ट्रिम और तीसरा हेलीकॉप्टर स्ट्रिम। इसके साथ-साथ मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रॉनिक और वेपनट्रेड में अलग-अलग कोर्स कराया गया। ट्रेनिंग खत्म होने तक हमें हवाई जहाज (एयरक्राफ्ट) के बारे में पूरा ज्ञान प्राप्त हो चुका था।

ट्रेनिंग खत्म होने के बाद हम मद्रास के संस्थान से उत्तीर्ण होकर अपने-अपने फ्लीट में तैनात हो गए। मेरी तैनाती एविएशन मैकेनिकल ट्रेड में ट्रांसपोर्ट फ्लीट (आईएल-76 ट्रांसपोर्ट एयरक्राफ्ट) में हुई। उस एयरक्राफ्ट में मुझे फिर 6 महीने की ऑन-जॉब ट्रेनिंग लेनी पड़ी। उसके बाद मैं पूरी तरह से आईएल-76 एयरक्राफ्ट के रखरखाव (मेंटेनेंस) में नियोजित हो गया। आईएल-76 (भारतीय नाम गजराज) एक रूसी जहाज था। वह इतना पावरफुल था कि एक गांव को 90 टन तक उठाकर उड़ सकता था और वह लगातार 10 घंटे 12 कि.मी. की ऊँचाई पर उड़ सकता था। मुझे जहाज में उड़ने की काफी आकांक्षा थी। बचपन में हवाई जहाज को आसमान में ऊपर उड़ते हुए देखा था। जब मैंने पहली बार उड़ान भरी तो ऊँचाई से जमीन, आदमी और इमारतें छोटे-छोटे दिखते थे।

आईएल-76 एक परिवहन (ट्रांसपोर्ट) हवाई जहाज है। वह हर दिन भारत की उत्तरी सेक्टर में नियोजित थल सेना जवानों के लिए खाना, ड्राई राशन इत्यादि की आपूर्ति करता था। उसके अलावा देश की हर प्राकृतिक विपत्ति में आपातकालीन योगदान देता था। भारत के अलावा अन्य देशों को आपातकालीन

परिस्थिति में चिकित्सीय सहायता पहुँचाने एवं अन्य प्रकार के सामानों की सप्लाई भी करता था। मेरे लिए एक इमरजेंसी किट थी जिसमें दो-तीन दिन ठहरने के लिए हर आवश्यक सामान हमेशा तैयार रहता था। मैं जहाज में एरो इंजीनियर इंजन प्रबंधन में दक्ष था। हमेशा पायलट के साथ उड़ने से पहले जहाज को तैयार करना और खराब होने पर उसको ठीक करना (स्नैग रेक्टिफिकेशन) मेरा मुख्य काम था। मैं इसके लिए हमेशा मानसिक एवं शारीरिक रूप से तैयार रहता था क्योंकि कब, कहां जरूरत पड़ जाए यह निश्चित नहीं था। यह काफी रोमांचकारी होने के साथ-साथ बहुत जोखिम भरा काम था। हर सोमवार को श्रीनगर और हर महीने में एक बार असम एवं अंडमान का सेक्टर होता था। मुझे वह दिन आज भी याद है जब मेरी पत्नी चार दिनों के लिए माइके चली गई। मेरी बेटी 6 साल की थी



और अचानक रात को करीब 1.00 बजे ग्राउंड मेंटिनेंस इंजीनियर 'स्कैडन लीडर' का फोन आया और वे कहने लगे "दास जहाज के पास आ जाओ, इंजन स्टार्ट नहीं हो रहा है।" मैंने

अपनी बेटी से कहा "तुम दरवाजा अंदर से बंद करके सो जाओ।" मैं सुबह होने से पहले वापस आ जाऊंगा और तुम्हें स्कूल ले जाऊंगा। ठीक वैसा ही हुआ। मैं स्नैग रेक्टिफिकेशन करके जहाज के टेक-ऑफ करते ही करीब सुबह 6.00 बजे घर वापस आ गया। जब मैं कोई सोर्टी (उड़ान) पर जाता था तो मेरी बेटी और बीवी घर पर इंतज़ार करते थे और जैसे आईएल-76 की लैंडिंग का साउंड सुनाई देता था। वह समझ जाते थे कि मैं आ गया क्योंकि मेरा घर बिल्कुल रनवे के करीब था। जब मैं श्रीनगर जाता था तो भर-भर के एप्पल लेकर आता था और अंडमान से नारियल खुद तो खाता ही था और पड़ोसियों को भी खिलाता था।

भारतीय वायुसेना में कार्य करते हुए मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। रोमांच(एडवेंचर्स) क्या होता है, वह काम करने

के दौरान मुझे एहसास हुआ। इस दौरान मुझे भारत के लगभग हर शहर में जाने का मौका मिला। इसके अलावा मुझे विदेशों जैसे कि फ्रांस, मिस्त्र, श्रीलंका, अफगानिस्तान और यूएई आदि में भी जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और मिस्त्र का पिरामीड एवं फ्रांस का पेरिस टावर (Eifil Tower) देखने का मौका मिला या यूं कहें एयरफोर्स ने मुझे बहुत कुछ दिया। वहां भी 20 साल सेवा के बाद नियमानुसार सेवा एक्सटेंशन (सेवा-विस्तार) का मौका मिला। लेकिन मैंने सेवा एक्सटेंशन न करने का फैसला किया और त्यागपत्र में अपने हस्ताक्षर किए। मैं अगर चाहता तो सेवानिवृत्ति की आयु तक (57वर्ष) एयरफोर्स के लिए सेवा प्रदान कर सकता था लेकिन मैंने अपना शेष जीवन सिविल क्षेत्र में सेवा प्रदान करने का निर्णय लिया और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में लग गया। सीजीएल-2011 की प्रतियोगी परीक्षा उत्तीर्ण होते ही मेरा वायुसेना की सेवा से विदा लेने का समय भी आ गया। जब मैं वहां से 31 मार्च 2011 को कार्यमुक्त हो रहा था तब मैं आखिरी बार अपने आईएल-76 एयरक्राफ्ट के कॉकपिट में आखिरी बार गया और नीचे आकर उसके चक्के के पास बैठ गया। मैं अपने आंसू नहीं रोक पाया। सभी वरिष्ठ अधिकारियों एवं साथियों से बहुत सम्मान, स्नेह एवं भेंट प्राप्त हुआ। फिर आखिरी घंटे में नियमानुसार हमारे एयर ऑफिसर कमांडिंग (एओसी) ने मुझे साक्षात्कार के लिए बुलाया। उन्होंने मेरा हाल-चाल पूछा और वायु सेना में काम करने का अनुभव एवं फीडबैक मांगा। मैंने अपना अनुभव उनसे साझा किया। उन्होंने पूछा, "आपलोग वायु सेना की सेवा क्यों छोड़ रहे हो?" मैंने बताया, "सर, मैंने बीस साल रक्षा सेवा में काम किया, बाकी की जिंदगी सिविल क्षेत्र में सेवा करने की इच्छा है।" उन्होंने यह सलाह दी कि आप कहीं भी काम करें, जिंदगी में कभी भी

अनुशासन नहीं भूलना। वायु सेना आपको एक धुला हुआ सफेद चादर बनाकर छोड़ रहा है। इसमें कभी भी दाग नहीं लगने देना। उन्होंने यह कहा- "हम गन्ने से एक बार रस निकालते हैं लेकिन सिविल क्षेत्र में गन्ने के आखिरी रस की बूँद निकलने तक गन्ने को दो-चार बार तोड़-मड़ोड़ कर मशीन में डालते हैं।" उनके कहने का मतलब मैं समझ गया। लौटते वक्त उन्होंने मुझे डिस्चार्ज सर्टिफिकेट के साथ इंजीनियरिंग में स्नातक (मेकेनिकल) की डिग्री प्रदान की जो सिविल क्षेत्र में नौकरी मिलने में सहायक होती। अंत में उन्होंने यह कहा कि, "जिनको वायु सेना नहीं छोड़ना हो, वो कल सुबह 7.00 बजे तक ड्यूटी पर आ जाना।" उनके एक हस्ताक्षर से मेरा त्यागपत्र रद्द हो सकता था।

आखिरी बार एयरक्राफ्ट को स्पर्श कर मैं वहां से दूसरे सफर पर निकल पड़ा। वायु सेना को अलविदा कहने के बाद मैं घर पहुँचा और एक कुर्सी पर बैठ कर रोने लगा। मुझे देख कर मेरी पत्नी और बेटी भी रोने लगे। मेरी पत्नी ने कहा कि आप वायु सेना की सेवा तो छोड़ चुके हो तो अब क्यों रो रहे हो? मुझे ऐसा लगने लगा कि सिर्फ मैं वायु सेना में नहीं था बल्कि मेरा पूरा परिवार वायु सेना में था। मैंने भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग में लेखाकार के रूप में ज्वाइन कर लिया। जब कोई एयरफोर्स में एक बार ज्वाइन कर लेता है तो 20 साल तक उसके निकलने का रास्ता बंद हो जाता है और जब कोई एक बार एयरफोर्स से निकल जाता है तो फिर से जाने का रास्ता भी बंद हो जाता है। सिविल और डिफेंस की कार्य शैली में तुलना करते हुए मेरी यह व्यक्तिगत राय है कि सबको पहले कुछ साल डिफेंस में काम करके फिर सिविल में काम करना चाहिए।

॥ जय हिंद ॥





अजय कुमार साव

कनिष्ठ अनुवादक

मन के सवाल

चलता रहता है ये कालचक्र निरंतर
 सुनो तो इसे क्या कहता यह रह-रहकर
 तर्क के तीरों से जो दुनिया साधते जाते हो
 अब तो कुछ सवाल मेरा मैं, मैं से ही करता है।
 जिसका जवाब देते हुए मेरा मैं खुद से ही झगड़ता है।
 मेरे भी कुछ सवालों के उत्तर क्यों न दे जाते हो?
 जन्म से पहले ही दूध की व्यवस्था कौन करता है?
 थक के सोने पर शरीर के दर्द को कम कौन करता है?
 ये जो दुनिया के हारे और बेचारे है?
 भला ये किसके सहारे है?
 अनाज तो शरीर खाता है, पर उसे शरीर कौन करता है?
 ज्ञान के अंधकार में जो मेरा शरीर ऐठा है?
 खोजता हूँ बाहर जिसे क्या वह अंदर ही बैठा है?
 फूलों में खूशबू और तितलियों में रंग कौन भरता है?
 माँ बनकर पालन और पिता बनकर शासन कौन करता है?
 तुम्हारे घर को तुम चलाते हो पर यह संसार कौन चलाता है?
 दुविधा में हो मन तो अंतर्मन बन राह कौन दिखाता है?
 ये बावला मन जब जब अहंकार करता है?
 तो उसे चूर चूर कौन करता है?
 पहाड़ को बालू, बालू को कण, बादल को जल, जल को हिम,
 महल को खंडहर कौन करता है?
 सूरज को गरम चंद्रमा को शीतल मरहम कौन करता है?
 कोई तो है जो है करता इस संसार का,
 व्यापारी है जो इस संसार व्यापार का ?
 एहसास तो उसका चाह से हो जाता है,
 पर न जाने क्यों वो सामने नहीं आता है?
 सुना है मैंने वह सर्वत्र है पर मेरा ये लोचन उसे क्यों न देख पाता है?



“समस्त आर्यावर्त या ठेठ हिंदुस्तान की राष्ट्र तथा शिष्ट भाषा हिंदी या हिंदुस्तानी है।”

-सर जार्ज ग्रियर्सन।



सोनी कुमारी साव

लेखाकार

75वें गणतंत्र दिवस पर कर्तव्य पथ समारोह में

गणतंत्र दिवस भारत का एक राष्ट्रीय पर्व है जो प्रतिवर्ष 26 जनवरी को मनाया जाता है। इस वर्ष 2024 में भारत का 75वां गणतंत्र दिवस मनाया गया। इसी दिन सन्-1950 को भारत सरकार अधिनियम, 1935 को हटाकर भारत का संविधान लागू किया गया था। यह दिवस भारत के तीन राष्ट्रीय अवकाशों में से एक है। भारतीय संविधान के रचयिता डॉ भीमराव अंबेडकर हैं।

एक स्वतंत्र गणराज्य बनने और देश में कानून स्थापित करने के लिए 26 नवंबर 1949 को भारतीय संविधान सभा द्वारा इसे अपनाया गया और 26 जनवरी 1950 को लागू किया गया था। इसे लागू करने के लिए 26 जनवरी की तिथि को इसलिए चुना गया क्योंकि 1930 में इसी दिन भारतीय कांग्रेस ने भारत के लिए पूर्ण स्वराज की घोषणा की थी। पूरे 2 साल 11 महीने और 18 दिन में भारतीय संविधान को तैयार किया गया था और 26 जनवरी 1950 को हमारे देश भारत को पूर्ण गणतंत्र घोषित किया गया।

कार्यक्रम समारोह:

26 जनवरी 2024 को नई दिल्ली में राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने कर्तव्य पथ से गणतंत्र दिवस समारोह में राष्ट्र का नेतृत्व किया। फ्रांस के राष्ट्रपति श्री इमैनुएल मैक्रॉन परेड के मुख्य अतिथि थे। इस परेड में भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता, एकता एवं प्रगति, बढ़ती स्वदेशी क्षमताओं, सैन्य शक्ति और देश की रक्षा सेवाओं एवं हर क्षेत्र में महिला शक्तिकरण की भागीदारी को प्रदर्शित किया गया।

‘विकसित भारत’ और ‘भारत लोकतंत्र की मातृका’ :

दोनों विषयों पर आधारित इस वर्ष की परेड में लगभग 13000 विशेष अतिथियों ने भाग लिया। पहली बार परेड की शुरुआत भारतीय संगीत से 100 से अधिक महिला कलाकारों द्वारा वाद्य-यंत्र (शंख, नादस्वरम्, नगाड़ा) बजाते हुए किया गया। कर्तव्य पथ पर मार्च करते हुए सभी महिलाओं की तीनों रक्षा-सेवा टुकड़ी में यह पहली भागीदारी थी। सलामी उड़ान के माध्यम से महिला पायलटों ने भी नारी शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हुए दर्शकों का मनोरंजन किया। केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल की टुकड़ियों में भी केवल महिला कर्मी शामिल थीं।

परंपरा के अनुसार सबसे पहले राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। इसके बाद राष्ट्रीय गान गाया गया और स्वदेशी बंदूक प्रणाली 105 एमएस इंडियन फील्ड गन से सलामी दी गई। फिर 105 हेलीकॉप्टर यूनिट के चार एमआई-17 IV हेलीकॉप्टर से कर्तव्य पथ पर उपस्थित दर्शकों पर फूल की वर्षा की गई। इसके बाद 100 से अधिक महिला कलाकार द्वारा नारी शक्ति के प्रतीक “आवाहन” बैंड का प्रदर्शन किया गया। इसके बाद राष्ट्रपति द्वारा सलामी के साथ परेड की शुरुआत हुई। परेड की कमान दूसरी पीढ़ी के सेना अधिकारी परेड कमांडर, लेफ्टिनेंट जनरल भवनीश कुमार, जनरल ऑफिसर कमांडिंग, दिल्ली एरिया संभाले मेजर जनरल सुमित मेहता, चीफ ऑफ स्टाफ मुख्यालय दिल्ली क्षेत्र परेड सेकेंड-इन-कमांड थे। इसके बाद फ्रांसीसी कर्तव्य पथ सशस्त्र बलों के संयुक्त बैंड और मार्चिंग दल के मार्च पास्ट का गवाह बना। इस 30 सदस्यीय मार्चिंग दल का नेतृत्व कैप्टन नोएल ने किया। एक मल्टी-रोल टैंकर परिवहन विमान और फ्रांसीसी वायु तथा अंतरिक्ष बल के दो राफेल लड़ाकू विमान सलामी मंच से आगे बढ़ते समय टुकड़ियों के ऊपर उड़ान भरी।

भारतीय सेना की टुकड़ी मैकेनाइज्ड कॉलम का नेतृत्व करने वाली पहली सेना टुकड़ी 61 कैवलरी की थी, जिसका नेतृत्व मेजर यशदीप अहलावत ने किया। 1953 में स्थापित 61 कैवलरी दुनिया में एकमात्र सेवारत सक्रिय हार्स-कैवलरी रेजीमेंट है, जिसमें सभी स्टैंड हॉर्स कैवलरी यूनिट्स शामिल हैं। इस समारोह में 11 मैकेनाइज्ड कॉलम, 12 मार्चिंग टुकड़ियों और आर्मी एविएशन कोर के उन्नत लाइट हेलीकॉप्टर ने भी सलामी उड़ान भरी। मैकेनाइज्ड कॉलम में टेक टी-90 भीष्म, नाग, एनएजी मिसाइल सिस्टम एंड इंफैंटीकाम्बैट व्हीकल, ऑल टैरेन व्हीकल, पिनाका, वेपन लोकेटिंग रडार सिस्टम (स्वाति) सर्वत्र बीजिंग सिस्टम ड्रोन, जैमर सिस्टम और मध्यम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल सिस्टम आदि प्रमुख आकर्षण थी। मार्चिंग दस्तों में मद्रास रेजीमेंट, राजपूताना राइफल्स, सिख, रेजीमेंट और कुमाऊं रेजीमेंट शामिल थे।

भारतीय नौसेना दल:- भारतीय नौसेना दल में 144 पुरुष और महिला अग्निवीर शामिल थे, जिनका नेतृत्व दल के रूप में लेफ्टिनेंट प्रज्वल एम और प्लाटून कमांडर के रूप में लेफ्टिनेंट मुदिता गोयल, लेफ्टिनेंट शरवानी सुप्रिया और लेफ्टिनेंट देवीका एच ने किया।

भारतीय वायुसेना दल:- भारतीय वायुसेना (आईएएफ) की टुकड़ी में सक्काइनलीडर रश्मी ठाकुर के नेतृत्व में 144 वायु सैनिक और चार अधिकारी शामिल थे। सक्काइन लीडर सुमिता यादव और प्रतीति अहलवालिया और फ्लाइट लेफ्टिनेंट कीर्ति रोहिल कमांडर के पीछे अतिरिक्त अधिकारियों के रूप में मार्च पास्ट किया। आईएएफ की झांकी 'भारतीय वायु सेना:सक्षम, सशक्त,आत्मनिर्भर' थीम पर थी।

दिग्गजों की झांकी:-परेड का एक और मुख्य आकर्षण"राष्ट्रीय निर्माण: पहले भी, अब भी, आगे भी और हमेशा" थीम पर दिग्गजों की झांकी थी। इसमें देश की सेवा से पूर्व सैनिकों की बहादुरी और बलिदान को प्रदर्शित किया गया।

डीआरडीओ की झांकी और उपकरण:-परेड में डीआरडीओ की विकसित कई महत्वपूर्ण प्रणालियों प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया गया। आत्मनिर्भरता के प्रवर्तक के रूप में रक्षा अनुसंधान के मुख्य क्षेत्र में डीआरडीओ की महिला वैज्ञानिकों का बहुमूल्य योगदान रहा है। डीआरडीओ की झांकी "भूमि, वायु, समुद्र, साइबर और अंतरिक्ष" जैसे सभी पांच आयामों में रक्षा कवच प्रदान करके राष्ट्र की रक्षा करने में महिला सशक्ति विषय पर आधारित थी। उत्कृष्ट वैज्ञानिक श्रीमती सुनीता देवी जैनादल कमांडर, उनके साथ श्रीमती लक्ष्मी माधवी, श्रीमती जे सुजाना चौधरी और श्रीमती ए भुवनेश्वरी भी झांकी में मौजूद थी।

भारतीय तट रक्षक:- भारतीय तटरक्षक (आईसीजी) दल का नेतृत्व पहले सहायक कमांडेड चुनौती शर्मा ने किया और उनके बाद गार्ड सहायक कमांडेंट स्तर की आधिकारी प्रिया दहिया, हार्दिक और पल्लवी ने किया। 154 जहाजों और 78 विमानों के बेड़े के साथ आईसीजी समुद्र में खतरों का मुकाबला करने में सक्षम है।

सीएपीएफ और दिल्ली पुलिस की टुकड़िया:-केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल (सीएपीएफ) और दिल्ली पुलिस की टुकड़ियों का नेतृत्व महिला कर्मियों ने किया था। सीमा सुरक्षा बल के मार्चिंग दस्ते का नेतृत्व सहायक कमांडेड मोनिका लाकड़ा ने किया। सहायक कमांडेंट तनमयी मोहंती, केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल; सहायक कमांडेंट मेघा नायर, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल; सहायक

कमांडेंट मोनिचा शर्मा, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस; डिप्टी कमांडर नैसी सिंगला सशस्त्र सीमा बल और अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त श्वेता के सुगथन, दिल्ली पुलिस के दल द्वारा टुकड़ियों का नेतृत्व किया गया। सीमा सुरक्षा बल की ऊंट टुकड़ी का नेतृत्व डिप्टी कमांडेंट मनोहर सिंह खींची ने किया। दूसरी बार महिला ऊंट सवार ने अपने सजे हुए ऊंटों के साथ परेड में हिस्सा लिया।

एनएसएस दल:-200 महिला स्वयंसेवकों द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) दल का गठन किया गया था। इसका नेतृत्व एनएसएस के क्षेत्रीय निदेशालय, गुवाहाटी की रागनी तमांग ने किया।

प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार विजेता: प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार बहादुरी, कला एवं संस्कृति, खेल विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, नवाचार और सामाजिक सेवा के क्षेत्र में असाधारण क्षमताओं और उत्कृष्ट उपलब्धियों वाले विभिन्न राज्यों के बच्चों को प्रदान किया जाता है।

झांकी : इस बार परेड के दौरान 16 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों (यूटी) की झांकियां कर्तव्य पर पथ पर निकली, जिनके द्वारा भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता और रचनात्मकता को प्रदर्शित किया गया।

गणतंत्र दिवस समारोह में दिखाई गई सभी 25 झांकियों में से सबसे अच्छी झांकी ओडिशा की थी। ओडिशा की झांकी को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। रंगीन झांकी में महिला सशक्तिकरण को प्रदर्शित किया गया था। ओडिशा की विजेता झांकी में हस्तशिल्प और हथकरघा क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी को दिखाया गया था। इसके अलावा महिलाओं को कैशलेस लेनदेन और ई-प्लेटफार्म मार्केटिंग करते हुए भी दिखाया गया।

घोरडो पर्यटन ग्राम को प्रदर्शित करने वाली गुजरात की झांकी को लोगों की पसंद श्रेणी में पहला स्थान मिला है। केंद्रीय मंत्रालयों और विभागों में से सबसे अच्छी झांकी संस्कृति मंत्रालय की थी। 'भारत लोकतंत्र की जननी' थीम वाली झांकी को पहला स्थान मिला है जबकि गृह मंत्रालय की झांकी को दूसरा स्थान मिला है। गृह मंत्रालय की झांकी में वाइब्रेंट विलेज को प्रदर्शित किया गया था। जजों की पसंद श्रेणी में गुजरात दूसरे स्थान पर रहा जबकि तमिलनाडु तीसरे स्थान पर। लोगों की पसंद श्रेणी में उत्तर प्रदेश को दूसरा और आंध्र प्रदेश को तीसरा स्थान मिला है। उत्तर प्रदेश की झांकी में रामलला को दिखाया गया था। लोगों की पसंद श्रेणी में विजेताओं का चयन करने के लिए, My-GOV प्लेटफार्म के जरिए पोल कराया गया था।

वंदे भारत 3.0 - रक्षा मंत्रालय और संस्कृति मंत्रालय

ने लगातार तीसरे वर्ष 'नारी शक्ति की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति संकल्प से सिद्धि' विषय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम 'वंदे भारतम्' प्रस्तुत किया।

मोटरसाइकिल प्रदर्शन- सीआरपीएफ, बीएसएफ और एसएसबी की महिला कर्मियों ने मोटरसाइकिल प्रदर्शन के दौरान साहसिक करतब दिखाकर देश की नारी-शक्ति का प्रदर्शन किया। इसमें 260 से अधिक महिलाओं ने चंद्रयान, सर्वत्र सुरक्षा, अभिवादन और योग से सिद्धि सहित विभिन्न बनावटों के माध्यम से अपनी बहादुरी, वीरता और दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन किया।

सलामी उड़ान (फ्लाई पास्ट) - फिर नजरें कर्तव्यपथ से हटकर आसमान की ओर चली गईं जहाँ 54 विमानों/हेलीकॉप्टरों के लुभावने एयर शो के साथ भारतीय वायुसेना का सबसे बेसब्री से इंतज़ार किए जाने वाला कार्यक्रम 'फ्लाई

पास्ट' शुरू हुआ। इनमें फ्रांसीसी वायु एवं अंतरिक्ष बल के तीन विमान, भारतीय वायु सेना के 46, भारतीय नौसेना का एक और भारतीय सेना के चार हेलीकॉप्टर शामिल थे। लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट 'तेजस', राफेल, एसयू-30, मिग-21 अपग्रेड, पी-8 आई, जगुआर, डकोटा, डोर्नियर, सी-17 सी-130जे के साथ-साथ लाइट कॉम्बैट हेलीकॉप्टर 'प्रचंड', उन्नत हल्के हेलीकॉप्टर और अपाचे जैसे पुराने और अधुनिक विमान तेजस, नेत्र, वरूण, वज्रांग, त्रिशुल, अमृत, प्रचंड, अर्जुन और तंगेल सहित विभिन्न संरचनाओं का प्रदर्शन किया गया। अंत में, राफेल लड़ाकू विमान वर्टिकल चार्ली युद्धाभ्यास भी दिखाया गया। समारोह का समापन राष्ट्रगान और तिरंगे वाले गुब्बारे छोड़े जाने के साथ हुआ।

महत्वपूर्ण लिंक, रक्षा मंत्रालय वेबसाइट
गणतंत्र दिवस विकिपीडिया



“भारतेंदु और द्विवेदी ने हिंदी की जड़ पाताल तक पहुँचा दी है; उसे उखाड़ने का जो दुस्साहस करेगा वह निश्चय ही भूकंपध्वस्त होगा।”
- शिवपूजन सहाय।



सुश्री सुभोश्री पात्रा

पुत्री- टी प्रसाद राव पात्रा, लेखाकार

चाय एक जज़बात

जज़बात मिलकर

यह चाय बनती होगी

चाय की यह एक कहानी है

जो भावों को जगाती है

एक प्याली गर्म सी

जीवन के हर पल को छू जाती है।

सुबह की पहली चाय

जगाती है नयी उमंग

संगीत की सरगम बनकर

मन को नयी आस्था देती है।

सुबह की आलस हो

या शाम की थकावट

सब दूर कर देती है

बस ये एक कप चाय

मानो चाय नहीं जैसे

नशा हो कहते है

थकावट हो या कोई

गम चाय की एक

चुस्की से सब

दूर हो जाता है।

जीवन की यात्रा में चाय

साथी बनी हर ठोकर की

चाय की ये लहरे ये उठते धुँए

भावों की गहराई से जुड़ी है।

दर्द को बाटने में हो

या दर्द को गायब करने में

दोस्तों के साथ समय बिताना हो

या दुख बाटने में

विधार्थी की थकावट से लेकर

नींद भगाने में

सबमें हमारा साथ देती है

बस ये एक कप चाय।

चाय नहीं मानो कभी ये

जीवन के लिए अमृत ही

बन जाती है

चाय की एक बूंद से हम

जीवन की समृद्धि का अहसास करते है।

जब चाय की बात आती है

बाकी बातें चाय के बाद आती है

मानो चाय नहीं

ये एक जज़बात है।





श्रीमती शांतिलता सेठी

पर्यवेक्षक

दिल है कि मानता नहीं

जिंदगी है तो समस्या है और समस्या है तो समाधान भी है किंतु समाधान केवल समय के साथ ही होता है। समय बहुत बलवान होता है क्योंकि जीवन में जितनी भी समस्याएं आ जाएं समय के साथ उसका रास्ता निकल ही जाता है। इसलिए हमें यह मान लेना चाहिए कि सुख-दुख और समस्याएं सभी जीवन का हिस्सा हैं।

मेरी सहेली अनुपमा ऐसे ही एक समस्या से जूझ रही थी। उसका समाधान वह वर्षों से खोज रही थी लेकिन सालों बीत जाने के बाद भी समाधान नहीं मिला और समय के साथ वह समस्या और भी बढ़ती गई। स्नेह और ममता में अंधी होकर वह उसे छोड़ भी नहीं पा रही थी। यदि कोई उसे समझाने बैठे तो वह बोलती कि - 'दिल है कि मानता नहीं'।

अनुपमा मेरे बचपन की मित्र थी। हमने कक्षा 1 से लेकर 11 तक एक ही विद्यालय में एक साथ शिक्षा ग्रहण की थी। हमारे बीच इतना प्यार देख मेरी माँ भी अनु को अपनी बेटी की तरह प्यार देती थी। अनुपमा के परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी इसलिए पढ़ाई पूरी होते ही वह नौकरी की तैयारियों में लग गई। वह हर वक्त इसी चिंता में रहती कि किस प्रकार वह अपने माता-पिता व भाई-बहन को एक अच्छी जिंदगी दे पायेगी। भगवान ने उसकी प्रार्थना सुन ली और थोड़े समय बाद ही उसे केंद्र सरकार के आयकर विभाग में क्लर्क की नौकरी मिल गई। नौकरी मिलते ही उसने अपने भाई-बहन व माता-पिता को अपने पास बुला लिया। कुछ समय बाद उसकी बहन की भी नौकरी मिल गई। कुछ समय बीतने के बाद उसने स्वयं एक योग्य लड़के का चयन कर उसके बारे में अपने माता-पिता को बताया। लड़का अच्छा था। बैंक में एक अधिकारी के रूप में कार्य करता था। अच्छा लड़का देखकर अनु के पापा ने दोनों की धूमधाम से शादी करवा दी। उसके पति दूसरे राज्य में नौकरी करते थे। अनु ने अपने दोनों बच्चों को खुद ही पाल-पोष कर बड़ा किया और बेटी को डॉक्टर एवं बेटे को इंजीनियर की शिक्षा दिलवाई। उसने अपनी बेटी की शादी भी बहुत धूमधाम से एक डॉक्टर से करवा दी। उसकी बेटी-दामाद दोनों एक डॉक्टर हैं और दोनों का जीवन बहुत अच्छे से कट रहा था। अनु दफ्तर सुबह 9.30 में चली जाती और शाम को 6.30 पर घर आती थी।

उसके पति सेवानिवृत्त होने के कारण घर पर ही रहते थे। अपनी इतने दिनों की मेहनत की कमाई से अनु ने एक बड़ा मकान भी बना लिया था ताकि उसके बच्चों को किसी के सामने हाथ फैलाने की जरूरत न पड़े। अनु को नौकरी करते हुए 39 वर्ष हो गए। अनु से रोज रात को प्रायः 10 मिनट मेरी बात जरूर होती थी। अनु अपने जीवन में बहुत खुश थी। एक अच्छे व्यक्ति के साथ विवाह करके बेटी भी अपने ससुराल में बहुत खुश थी। अपने बेटे को लेकर वह बहुत परेशान थी। इंजीनियरिंग करने बाद उसने नौकरी करने की कोशिश नहीं की। बाद में वह वकालत पढ़ने की जिद्द पकड़ ली। अनु अपने बेटे के प्यार में पूरी तरह अंधी हो गई थी। वह उसकी सारी बातें मानती थी। वह अपने बेटे के जीवन को व्यवस्थित करना चाहती थी ताकि उसकी मृत्यु के बाद उसके जीवन में किसी प्रकार की परेशानी न हो। उसके बेटे की शादी के लिए हम मिलकर लड़की ढूढ़ने लगे लेकिन बेटे ने खुद ही एक लड़की पसंद कर ली थी और उसी से शादी करने की जिद्द करने लगा। वह उससे शादी करने के लिए अपनी माँ को मनाने लगा। सभी लोग शादी के लिए मान गए। शादी के लिए ठीक चार-पाँच महीने बचे होंगे परन्तु मेरी अनु अब दुखी रहने लगी थी। एक ही कार्यालय में नौकरी करने के कारण हम दोनों रोज मिलते थे। हम दोनों को एक दूसरे के परिवार के बारे में सब कुछ पता था। मेरे दो बेटे हैं और दोनों इंजीनियर हैं। एक मुंबई तथा एक बंगलौर में नौकरी करता है। दोनों शादीशुदा हैं इसलिए मुझे दोनों के पास जाना पड़ता था। मेरी नौकरी खत्म होने के बाद हम सब भी बेटे के पास चले जाएंगे। मुझे इस बात की चिंता लगी रहती थी कि मेरे जाने के बाद अनु क्या करेगी। उसकी बेटी अपने माता-पिता को सारी खुशियाँ देना चाहती थी। लेकिन वह किसी के ऊपर बोझ नहीं बनना चाहती थी।

एक दिन की बात है जब अनु दो दिनों तक ऑफिस नहीं आई और फोन भी नहीं उठा रही थी। मुझे थोड़ा डर लगा और मैं इस शंका में उसके घर चली गई कि कहीं उसकी तबीयत तो खराब ना हो गई। अनु खामोश होकर बैठी थी चुलबुली अनु के चेहरे पर उदासी अच्छी नहीं लगती थी। उसका बेटा और बहु घर पर नहीं थे। दिन में शायद खाना भी नहीं बना हुआ था।

मैंने अनु से पूछा, -“क्या हुआ ऑफिस क्यों नहीं आई”। अनु ने कहा, “मैं अपना मान-सम्मान, अपने परिवार का सम्मान बचाते बचाते थक गई हूँ। बहू शादी के 4 महीने के बाद अपना रंग बदलने लगी। सुबह 8:30 नहीं तो 9:30 में उठकर बनाया हुआ खाना खाकर दरवाजा बंद करके सो जाती थी। शादी के बाद मेरे बेटे ने अब मुझे ऑफिस छोड़ने से भी मना कर दिया। मेरे बेटे को अपनी बीवी के अलावा कुछ भी नहीं दिखता। घर के बारे में उन्हें कोई चिंता नहीं है। एक दिन ऐसी नौबत आ गई कि मैंने उन्हें अलग रहने के लिए बोल दिया। गुस्सा में एक बार कही इस बात को उन लोगों ने गंभीरता से ले लिया और अपने ससुर के घर जाकर रहने लगे। कुछ महीनों के बाद मेरे बेटे ने मुझे बताया कि वह भुवनेश्वर कोर्ट में प्रैक्टिस करेगा इसलिए भुवनेश्वर में मकान भाड़े पर लेने के लिए उसे ₹10000 की आवश्यकता है। मैं भी इसी बात पर राजी हो गई और यह बात मेरे पति को भी मालूम नहीं है। यह सब सुनकर मुझे अन्नू पर बहुत गुस्सा आया और मैं बोली- “तू कैसी माँ है, अपने बच्चों को अपने से दूर कर रही है। पैसा देना बंद कर दे, सब कुछ ठीक हो जाएगा। अनु ने मुझे बोला कि- ‘मेरा बेटा तो ऐसा नहीं था। वह मुझे बहुत प्यार करता था। क्या हुआ ऊपर वाला जाने, वह जाने! मैं फिर भी निश्चित हूँ कि मेरा बेटा अपनी पत्नी के साथ अच्छे से है। मेरे प्यार की अभी उन्हें जरूरत नहीं है। मैं अपने मन और दिल को समझने में असफल हूँ।”

मैंने अनु से पूछा, “आजकल फोन करता है। तुम्हारे पास आता है या नहीं”। उसने उत्तर दिया कि कुछ जरूरत हो तभी फोन करता है। अब वह एक बड़ा घर चेम्बर बनाने के लिए लेना चाहता है। लेने की बात भी की थी और कुछ ज्यादा रुपए

भी मांगा है। घर का भाड़ा एडवांस देने के लिए लिया है। मैंने अनु से पूछा, और कुछ बाकी रह गया है देने के लिए क्या? चलो आज उसके पास जाएंगे और उसे देख कर आएंगे। मैं उनसे बात करूंगी। अनु ने कहा कि वह उसके वर्तमान घर का पता उसे मालूम नहीं केवल फोन पर बात होती रहती है। कभी-कभी वह ऑफिस आ जाता है। यह सब सुनने के बाद मेरे पांव के नीचे से जमीन खिसक गई। जैसे लगा। मैंने अनु को कहा कि, ‘आखिर तुम्हारे दिल में क्या है जो इतना कुछ होने के बाद भी तुम यह सब कर रही हो? रुपए अपने लिए रखो बाद में बुढ़ापे में काम आएंगे’। अनु ने धीमे स्वर में कहा-“दिल है कि मानता नहीं”।

अनु ने मुझे एक बात बोली जब मेरे पास कुछ नहीं था तब तेरी माँ ने मुझे सहारा दिया था। अब तुम्हारी बारी है। एक माँ हर हाल में अपने बच्चों को खुश देखना चाहती है। इसलिए माँ को सबसे ऊँचा दर्या दिया जाता है। एक माँ ही बिना स्वार्थ के प्यार कर सकती है। अपने बच्चों से केवल थोड़ा अपनापन चाहती हूँ कि मेरा बेटा सबसे पहले आकर माँ के पास बैठकर पूछे, आज वक्त पर खाना खाई हो कि नहीं। माँ को अपने बेटे की धन-संपत्ति पर कोई लालच या मोह-माया नहीं है। वह केवल इतना ही चाहती है कि थोड़ा प्यार अपने बेटे से लेकर एक साथ खुशी से जीवन जीना है। बेटा जब बाप बन जाता है तब भी वह पोते से ज्यादा अपने बेटे को प्यार करती है। वह हर वक्त सोचती रहती है कि उसका बेटा हमेशा खुश रहे। रात को बेटा जब देर से घर लौटता है तो केवल माँ ही रातभर जागकर बेटे का इंतज़ार करती है। अपने बेटे की सारी गलतियों को माफ कर देती है और फिर बोलती है, क्या करूँ, “दिल है कि मानता नहीं”।



“अखिल भारत के परस्पर व्यवहार के लिये ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे जनता का अधिकतम भाग पहले से ही जानता समझता है।”

- महात्मा गाँधी।



प्रकृति का गान

धृति रानी
लेखाकार

यह हरियाली की चादर ओढ़े
कह रही है कुछ प्रकृति
चलो जरा समझे इन्हें
कैसी दिखती है ये आज
चाहे हो चिलचिलाती धूप
चाहे हो ठंड कपकपाती
बरसे चाहे बारिश रिमझिम
चाहे हो जाए सुखाड़
बने चाहे रेगिस्तान
बन जाए यूँ कीचड़ पार
जीती है वह हर परिस्थिति में
खड़े रहती अपना सीना तान
देती छाया नन्हें-नन्हें जानों को
बन कर एक दूसरे का सहारा
यह है हमारे प्रकृति की खूबी
रहती हरदम पुलकित अपार
फैलाती चारों ओर खुशहाली
देती सबको अन्न और प्यार
सह कर इतनी कठिन मार को
रहती हरदम एक समान
रंग बिरंगे फूलों वाली
बगिया है बनाती चार
सूखे-सूखे रेगिस्तानों में
उगती है वह शूल समान
रंग देती वह सूने पन को
खुशियां देती एक हज़ार
हर पल क्षण में सुंदर दिखती
प्रकृति हमारी एक समान।



तुम जैसा कैसे बन जाऊँ?

विनोद कुमार
लेखाकार

तुम जैसा कैसे बन जाऊँ?
तुमको रस मिलता दुःख देकर,
मुझको रस मिलता सुख देकर।
कर के दुखी तुम्हें भी वैसे,
अपने सुख को क्यों बिसराऊँ ॥
तुम जैसा कैसे बन जाऊँ?

हर दम षडयंत्रों से अपने,
बाण चलाते रहते सब पे।
झूठे मान में पड़कर अपने,
मान हनन करते हो सबके ॥
तुम तो द्वेष पालते सब से,
मैं तो प्रेम बांटता सब से।
पड़कर फेर तुम्हारे मैं भी,
खुद को क्यों कलुषित कर जाऊँ ॥
तुम जैसा कैसे बन जाऊँ?

तुम हो भुजंग तो मैं चंदन
तुम तिरस्कार, मैं अभिनंदन।
तुम अंधकार तो मैं प्रकाश,
तुम दावानल तो मैं फुहार।
तुम जैसा बनकर के ही,
खुद को क्यों विस्मृत कर जाऊँ ॥
तुम जैसा कैसे बन जाऊँ?

सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपी आवश्यक है तो वो
देवनागरी ही हो सकती है

- जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर



श्री अभिजीत कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

प्राकृतिक संसाधन लेखांकन (Natural Resources Accounting)

प्राकृतिक संसाधन लेखांकन आर्थिक गतिविधियों के कारण प्राकृतिक संसाधनों की कमी और पर्यावरण क्षरण के मूल्यांकन करने की एक प्रक्रिया है। एनआरए (NRA) की अवधारणा प्राकृतिक पर्यावरण के विभिन्न घटकों और देश की आर्थिक प्रगति के बीच घनिष्ठ अंतःक्रिया को समझने हेतु बनाई गई है। यह इस अवधारणा पर आधारित है- 'किसी प्राकृतिक संसाधन के मापन से उसका बेहतर प्रबंधन होता है।'

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य:

- एनआरए की आवश्यकता की दिशा में पहला कदम 1970 में मानव पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र (यूएन) सम्मेलन (स्टॉकहोम सम्मेलन) में उठाया गया जब पहली बार आर्थिक विकास और पर्यावरणीय गिरावट के बीच संबंधों पर चर्चा की गई।
- संयुक्त राष्ट्र द्वारा स्थापित ब्रंटलैंड आयोग ने 1987 में पर्यावरण और आर्थिक गतिविधियों के बीच घनिष्ठ संबंध के विचार को व्यक्त किया, जिसके बाद 1992 में ब्राजील के रियो डी जेनेरियो में पर्यावरण लेखांकन और पृथ्वी शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया।

वैश्विक स्तर पर पहल:

- संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्ताव का शीर्षक, "हमारी दुनिया को बदलना; सतत विकास के लिए 2030 का एजेंडा" (25 सितंबर, 2016) जिसे 190 से अधिक देशों

की मंजूरी मिली, के अंतर्गत प्राकृतिक संसाधनों के खातों की तैयारी की आवश्यकता बताई गई। भारत इस प्रस्ताव का हस्ताक्षरकर्ता है।

- संयुक्त राष्ट्र ने 2012 में आर्थिक और पर्यावरण लेखांकन प्रणाली (System of Environmental and Economic Accounting - Central Framework) को अपनाया। यह एनआरए के लिए नवीनतम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत ढांचा है।
- ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, चीन, फ्रांस और जर्मनी जैसे लगभग 30 देशों ने पर्यावरण लेखांकन को अपनाने में विभिन्न स्तर की सफलता प्राप्त की है।
- यूरोपीय संघ द्वारा वित्त पोषित पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं (एनसीएवीईएस-Natural Capital Accounting & Valuation of Ecosystem Services) परियोजना के प्राकृतिक पूंजी लेखांकन और मूल्यांकन को संयुक्त राष्ट्रसांख्यिकी प्रभाग (यूएनएसडी), संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) और कन्वेंशन के सचिवालय द्वारा संयुक्त रूप से कार्यान्वित किया गया है।
- भारत इस परियोजना में भाग लेने वाले पांच देशों में से एक है - अन्य देश ब्राजील, चीन, दक्षिण अफ्रीका और मैक्सिको हैं।
- यह प्राकृतिक पूंजी के स्टॉक और प्रवाह को मापने और रिपोर्ट करने का एक व्यवस्थित तरीका प्रदान करने के



लिए लेखांकन ढांचे का उपयोग करने के प्रयासों को समाहित करने वाला एक व्यापक शब्द है।

हमारे देश भारत की विशिष्ट पहल:

- नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक ने निर्णय लेने की गुणवत्ता और सार्वजनिक जवाबदेही को बढ़ाने के लिए सरकारी लेखांकन और वित्तीय रिपोर्टिंग के मानकों में सुधार करने के उद्देश्य से 2002 में सरकारी लेखा मानक सलाहकार बोर्ड (Government Accounting Standard Advisory Board) की स्थापना की। इसमें भारत सरकार के सभी लेखा सेवाओं, भारतीय रिजर्व बैंक, आईसीएआई और राज्य सरकारों के नियामक प्राधिकरणों के प्रतिनिधि शामिल हैं।
- भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) के सुप्रीम ऑडिट संस्थानों के एक अंतरराष्ट्रीय निकाय का भी सदस्य है, जिसे पर्यावरण लेखांकन पर कार्यकारी समूह (Working Group on Environmental Auditing) कहा जाता है, जिसने 2010 में सुझाव दिया कि ऑडिट

संस्थानों को अपने देशों के प्राकृतिक संसाधन खातों को अपनाने में सहायता करनी चाहिए।

प्राकृतिक संसाधन लेखांकन का महत्व क्या है?

- **अर्थव्यवस्था और पर्यावरण के बीच अंतर्संबंध** - यह पर्यावरणीय संसाधनों को गैर-नवीकरणीय क्षति की मात्रा निर्धारित करता है और वास्तविक रूप से विकास के निर्धारण में सहायता प्रदान करता है।
- **नीति निर्धारण में सहायता:** सुदृढ़ डेटाबेस - नीति निर्माताओं को उनके निर्णयों के संभावित प्रभाव को समझने में मदद करना है।
- **सतत विकास लक्ष्य का प्रबंधन** - एनआरए का सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के साथ गहरा अंतर्संबंध है क्योंकि 17 लक्ष्यों में से 6 लक्ष्य सीधे प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन और उनके लेखांकन से संबंधित हैं। ये निम्नलिखित हैं:-

लक्ष्यसंख्या	उद्देश्य	विवरण
लक्ष्य -6	साफ पानी और स्वच्छता	सभी के लिए स्वच्छ पानी और स्वच्छता की उपलब्धता और उसका टिकाऊ प्रबंधन सुनिश्चित करना।
लक्ष्य -7	सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा	सभी के लिए सस्ती, भरोसेमंद, टिकाऊ और आधुनिक ऊर्जा की पहुंच सुनिश्चित करना।
लक्ष्य -12 लक्ष्य -13	जिम्मेदारी के साथ उपभोग और उत्पादन जलवायु परिवर्तन	उत्पादन और उपभोग पैटर्न को टिकाऊ बनाना। जलवायु परिवर्तन और उसके प्रभावों से निपटने के लिए तत्काल कार्रवाई सुनिश्चित करना।
लक्ष्य -14	जलीय जीवन	टिकाऊ विकास के लिए महासागरों, समुद्रों और समुद्री संसाधनों का संरक्षण और उनका ठीक से उपयोग सुनिश्चित करना।
लक्ष्य -15	भूमि पर जीवन	सतत उपयोग को बढ़ावा देने वाले स्थलीय पारिस्थितिकीय प्रणालियों, सुरक्षित जंगलों, भूमि क्षरण और जैव विविधता के बढ़ते नुकसान को रोकने का प्रयास करना।

- **जलवायु परिवर्तन से मुकाबला**- जलवायु परिवर्तन की निगरानी, माप और विश्लेषण के लिए परिसंपत्ति और प्रवाह खातों को एक उपयोगी ढांचे के रूप में मान्यता दी गई है।
- **अंतराष्ट्रीय प्रतिबद्धताएँ** - एसडीजी को पूरा करने के अलावा, यह भारत को परिसंपत्ति खाते बनाने में विशिष्ट देशों के समूह का हिस्सा बनने में मदद करेगा।

प्राकृतिक संसाधनों के लेखांकन से संबंधित चुनौतियाँ:-

- राज्य के अधिकारियों के बीच उचित प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण का अभाव है।
- परिसंपत्ति खाते तैयार करने में सीमाएँ - डेटा की आवधिकता का मानचित्रण।
- संसाधनों के लिए डेटा संग्रह में कई एजेंसियां शामिल हैं; यह डेटा साझाकरण/डेटा विसंगतता के मुद्दों को जन्म दे सकता है।

- सरकारी लेखांकन मानक सलाहकार बोर्ड (गसब) खनिज एवं ऊर्जा समेत विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों का लेखा-जोखा तैयार कर रहा है। इन आंकड़ों के आधार पर सरकार न केवल सुविचारित नीतिगत निर्णय ले सकेगी बल्कि इससे हरित जीडीपी के लक्ष्य को हासिल करने में भी मदद मिलेगी।
- गसब चार प्रमुख प्राकृतिक संसाधनों (खनिज और ऊर्जा संसाधन, जल संसाधन, भूमि संसाधन और वानिकी एवं वन्य जीव संसाधनों) का लेखा तैयार कर रहा है। इस पहल का उद्देश्य संसाधनों की उपलब्धता, उनसे मिलने



वाले राजस्व की संभावना, संबद्ध लागत और अगली पीढ़ी को ध्यान में रखते हुए सतत विकास को आगे बढ़ाना है।

- गसब की इस पहल से राज्यों में मौजूद संसाधनों के बारे में समूचा ब्योरा एक जगह उपलब्ध होगा तथा रॉयल्टी दरों के आकलन के साथ राज्यों के राजस्व हितों की रक्षा सुनिश्चित हो सकेगी। साथ ही यह संसाधनों के सतत उपयोग तथा भविष्य के राजस्व का सटीक आकलन के साथ अवैध खनन रोकने में भी मददगार होगा।
- सभी 28 राज्यों और एक केंद्रशासित प्रदेश (जम्मू-कश्मीर) के लिये वर्ष 2020-21 का संपत्ति खाता तैयार कर लिया गया है। इसमें 40 प्रमुख खनिजों, 63 लघु खनिजों एवं सभी चार जीवाश्म ईंधनों का पूरा विवरण दिया गया है।

खनिज पदार्थों के मामले में कुछ राज्य बेहद धनी हैं। इन राज्यों में झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा, राजस्थान, पश्चिम बंगाल आदि आते हैं। लेकिन इन राज्यों में इन प्राकृतिक संसाधनों

की चोरी भी खूब होती है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि राज्य सरकारों को अपने नेचुरल रिसोर्सेज की सही-सही जानकारी ही नहीं है। राज्यों में उपलब्ध खनिज और अन्य प्राकृतिक संसाधनों के आंकड़ों से न केवल सरकार सोच-विचार कर नीतिगत निर्णय ले सकेगी बल्कि इससे हरित जीडीपी के लक्ष्य को हासिल करने में भी मदद मिलेगी।

ओडिशा राज्य की स्थिति

ओडिशा राज्य में खनिज संसाधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। क्रोमाइट, बॉक्साइट (एल्यूमीनियम अयस्क), मैंगनीज अयस्क, ग्रेफाइट और निकल अयस्क के उत्पादन में



देश का सबसे बड़ा/शीर्ष उत्पादक राज्य है। यह उच्च गुणवत्ता वाले लौह अयस्क के शीर्ष उत्पादकों में से एक है। इस राज्य के पूर्व-मध्य में स्थित शहर ढेंकनाल के पास तालचर क्षेत्र से कोयला राज्य के कई बड़े उद्योगों के लिए ऊर्जा संसाधन प्रदान करता है।

ओडिशा की समृद्ध खनिज संपदा का आधार अनुकूल भूवैज्ञानिक व्यवस्था की उपलब्धता है। प्रायद्वीपीय भारत के पूर्वी तट पर स्थित इस राज्य में लगभग 72.5% क्षेत्र में प्री कैब्रियन रूपांतरित चट्टानों (आर्कियन और प्रोटरो जॉइक युग) की उपस्थिति है, जो अधिकांश खनिजों का पोषक है। ओडिशा देश के खनिजों के कुल उत्पादन का 44.11% (2021-22) योगदान देता है। ओडिशा में क्रोमाइट- 96%, कच्चा लोहा - 55%, मैंगनीस - 37% की उपलब्धता आकलित की गई है। अतः एन आर एस साधनों के लेखांकन एवं पर्यावरणीय संरक्षण के संदर्भ में ओडिशा का राज्य एवं देश के सतत विकास का विशिष्ट महत्व है।





संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप-समिति के साथ निरीक्षण बैठक।



विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता करते प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.)



हिंदी प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत पुरस्कार।



हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह 2023 की कुछ झलकियां



हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह के दौरान वातायन के 105 वें अंक का विमोचन करते हुए अधिकारीगण



हिंदी पखवाड़ा के दौरान राजभाषा परिवार



दिनांक 21.03.2024 को आयोजित हिंदी कार्यशाला

